Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ یُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَیِّاٰتِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: तुम अगर सदकों को प्रकट करो तो यह भी बहुत अच्छी बात है और अगर तुम उन्हें छुपाओं और ज़रूरत वालों को दो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है और अल्लाह तुम्हारी बहुत सी बुराइयां तुम से दूर कर देगा और अल्लाह हमेशा उस को जानता है जो तुम करते हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 41

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 सफर 1439 हिजरी कमरी 11 इख़ा 1397 हिजरी शमसी 11 अक्तूबर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

ख़ुदा ने मुझे ठीक चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ जैसा कि मसीह इब्ने मरयम चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में आया था भेजा और ख़ुदा मेरी सच्चाई के प्रमाण स्वरुप अपने बड़े शक्तिशाली निशान दिखा रहा है। आकाश के नीचे किसी विरोधी मुसलमान, यहूदी या ईसाई इत्यादि की सामर्थ्य नहीं कि उनका मुकाबला करे और ख़ुदा का मुकाबला एक असमर्थ और तुच्छ मनुष्य कर भी कैसे सकता है। यह तो बुनियादी ईंट है जो ख़ुदा की ओर से है।

प्रत्येक जो इस ईंट को तोड़ना चाहेगा वह तोड़ नहीं सकेगा लेकिन यह ईंट जब उस पर पड़ेगी तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर देगी, क्योंकि ईंट भी ख़ुदा की और हाथ भी ख़ुदा का है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह भी स्मरण रहे कि सूरह फ़ातिह: के श्रेष्ठतम उद्देश्यों में से प्रार्थना है कि-

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ

"इहदिनस्सिरातलमुस्तक़ीम सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"

(अलफ़ातिह:-6,7)

और जिस प्रकार इंजील की प्रार्थना में रोटी मांगी गई है। इस प्रार्थना में ख़ुदा से वे समस्त अनुकम्पाएं मांगी गई हैं जो पहले रसूलों और नबियों को प्रदान की गई थीं। यह मुकाबला भी देखने योग्य है और जिस प्रकार हज़रत मसीह की प्रार्थना स्वीकार होकर **ईसाइयों को रोटी का बहुत कुछ सामान** प्राप्त हो गया था इसी प्रकार यह क़ुर्आनी प्रार्थना **हज़रत मुहम्मद साहिब** के द्वारा स्वीकार होकर सज्जन और संयमी मुसलमान, विशेषकर उनके **पूर्ण आध्यात्मिक व्यक्ति बनी** इस्राईल के नबियों के **उत्तराधिकारी** ठहराए गए और मसीह मौऊद का इस उम्मत में पैदा होना भी इसी प्रार्थना की स्वीकारिता का **परिणाम** है। क्योंकि गुप्त तौर पर बहुत से सज्जन और संयमी मनुष्यों ने ठीक बनी इस्राईल के नबियों के समान हिस्सा लिया है। परन्तु इस उम्मत का मसीह मौऊद स्पष्टत: **ख़ुदा** की आज्ञा और आदेश से इस्राईली मसीह के मुकाबले पर खड़ा किया है, ताकि **मूसवी और मुहम्मदी धारा** की समानता समझ आ जाए। इसी उद्देश्य से **इस मसीह** की इब्ने मरयम से प्रत्येक पहलू से उपमा दी गई है। यहां तक कि इस इब्ने मरयम पर परीक्षाएं भी इस्राईली इब्ने मरयम की भांति आईं।

प्रथम जैसा कि ईसा इब्ने मरयम मात्र ख़ुदा की फूँक से पैदा किया गया इसी प्रकार यह मसीह भी सूरह तहरीम के वायदे से अनुकूल मात्र ख़ुदा की फूँक से मरयम के अन्दर से पैदा किया गया। और जैसा कि ईसा इब्ने मरयम की पैदायश पर बहुत शोर उठा और अंधे विरोधियों ने मरयम को कहा-

لَقَدْ جِئْتِ شَیْئًا فَرِیًّا

"लकद जे'त्ते शैयन फ़रिय्या"

इसी प्रकार यहां भी यही कहा गया और प्रलय जैसा शोर मचाया गया और जैसा कि ख़ुदा ने इस्राईली मरयम के प्रसव के समय विरोधियों को ईसा के सन्दर्भ में यह उत्तर दिया-

وَلِنَجْعَلَهٗۤ اٰیَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَ كَانَ اَمْرًا مَّقْضِیًّا

"वलेनजअलहू आयतन लिन्नासे व रहमतम्मिन्ना व काना अमरम्मक़ज़िय्या" (मरयम-22)

यही उत्तर ख़ुदा ने मेरे सन्दर्भ में बराहीन अहमदिया में आध्यात्मिक प्रसव के समय जो उपमा स्वरूप था विरोधियों को दिया और कहा कि तुम अपने छल-कपट से उसे मिटा नहीं सकते मैं उसको लोगों के लिए रहमत का **निशान बनाऊंगा** और ऐसा होना प्रारम्भ से ही ख़ुदा की एक सुनिश्चित नियति थी। फिर जिस प्रकार यहूदियों के विद्वानों ने हज़रत ईसा पर काफ़िर होने का फ़तवा लगाया। एक उद्दण्ड यहूदी विद्वान ने उस फ़तवे की लिपि तैयार की और दूसरे विद्वानों ने फ़तवा दे दिया। यहां तक कि बैतुलमुक़द्दस के सैकड़ों विद्वान और ज्ञानी जो प्राय: अहलेहदीस थे, उन्होंने हज़रत ईसा पर कुफ्र की मुहरें लगा दीं।★ यही मेरे साथ किया गया और फिर जैसा कि उस कुफ्र के पश्चात जो हज़रत ईसा के संबंध में किया गया था, उनको बहुत सताया गया, बुरी से बुरी ग़ालियां दी गई थीं, बुराइयों और ग़ालियों पर आधारित पुस्तकें लिखी गयी थीं। यही सब कुछ यहां हुआ, तथापि अठारह सौ वर्षों के पश्चात वही ईसा फिर उत्पन्न हो गया और वही यहूदी फिर उत्पन्न हो गए। अफ़सोस, यही अर्थ तो इस भविष्यवाणी का था कि "ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम" जो ख़ुदा ने पहले ही समझा दिया था परन्तु उन लोगों ने धैर्य से काम न लिया जब तक कि यहूदियों की भांति मग़ज़ूबे अलैहिम न बन गए। इस समानता की एक **ईंट** तो ख़ुदा ने अपने हाथ से लगा दी कि मुझे ठीक चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में **इस्लाम का मसीह** बनाकर भेजा जैसा कि मसीह इब्ने मरयम चौदहवीं शताब्दी के प्रारंभ में आया था और ख़ुदा मेरी सच्चाई के प्रमाण स्वरुप अपने बड़े शक्तिशाली निशान दिखा रहा है। आकाश के नीचे किसी विरोधी मुसलमान, यहूदी या ईसाई इत्यादि की सामर्थ्य नहीं कि उनका मुकाबला करे और ख़ुदा का मुकाबला एक असमर्थ और तुच्छ मनुष्य कर भी कैसे सकता है। यह तो बुनियादी ईंट है जो ख़ुदा की ओर से है।

प्रत्येक जो इस ईंट को तोड़ना चाहेगा वह तोड़ नहीं सकेगा लेकिन यह ईंट जब उस पर पड़ेगी तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर देगी, क्योंकि ईंट भी ख़ुदा की और हाथ भी ख़ुदा का है। दूसरी ईंट मेरे विरोधियों ने तैयार करके मेरे मुक़ाबले पर रख दी। मेरे मुक़ाबले पर वह कार्य किए जो उस समय के यहूदियों ने किए

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और स्वीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-13)

☆इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह शिक्षा दी है जो व्यक्ति अपने साथी का शुक्रिया अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला का शुक्रिया भी अदा नहीं करता। अतः इन मुसलमानों तथा पनाह लेने वालों का यह धार्मिक कर्तव्य है कि इस देश ने इन को यहां रहने तथा यहां से लाभ उठाने की आज्ञा देकर जो उपकार किया है वे इस को हमेशा याद रखें। ये पनाह लेने वाले अमन की तलाश में अपनी पुरानी ज़िन्दगी छोड़ कर निकले थे। और अब जब इन्हें सलामती तथा सुरक्षा मिल गई है उन का फर्ज़ बनता है कि इस देश के अन्दर शान्ति के साथ रहें। और इस देश के कानून का पालन करें। सभी शरणार्थियों का कर्तव्य है कि वे इस समाज का उपयोगी भाग बनें और याद रखें कि इस्लाम के पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी है कि बतौर एक मुसलमान देश प्रेम आप के ईमान का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए जिस देश ने इन शरणार्थियों को स्वीकार किया कि अब शरणार्थियों का कर्तव्य इस देश के प्रति वफादार होना है और उन्हें अपने कौशल का उपयोग करके इस देश को विकसित और उन्नति देने में मदद करना है।

अगर हम इस्लाम की असली तस्वीर देखना चाहते हैं तो हमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके चारों ख़लीफा के समय को देखना होगा। इसके उच्च उदाहरण साबित करते हैं कि इस्लाम शांति और न्याय के लिए एक चिराग़ है जो वैश्विक धार्मिक स्वतंत्रता और बहुलवाद की गारंटी देता है।

माल्मो में मस्जिद महमूद का उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर का स्वीडिश सम्माननीय लोगों से सम्बोधन तथा सम्बोधन के बारे में मेहमानों की प्रतिक्रयाएं।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

17 मई 2016 दिनांक मंगलवार(शेष.....)

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप सब पर अल्लाह तआला की सलामती तथा रहमत हो सब से पहले तो मैं इस अवसर पर आज लोगों का निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "हम एक कठिन समय से गुज़र रहे हैं। मुझे लगता है कि दुनिया की शांति हमारे सामने सबसे महत्त्वपूर्ण और नाजुक मुद्दा है। हम इस कठिन समय में इस स्थिति से कैसे मुकाबला कर सकते हैं? मेरे निकट सारी मानव जाति को देश, जाति और रंग और नस्ल से ऊपर उठ कर शांति, सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान जैसे बुनियादी मानवीय मूल्यों को उठाना होगा। किसी व्यक्ति की मान्यताओं, धर्म या जाति के आधार पर अब भेदभाव करने के लिए दुनिया में कोई जगह नहीं है। इसलिए, सरकार और धर्म दोनों को सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से साफ होना होगा। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार मान्यताओं को अपनाने की आजादी होनी चाहिए, क्योंकि उनका विश्वास एक व्यक्तिगत मामला है जिस कासम्बन्ध उस के दिल तथा दिमाग़ से है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी धार्मिक शिक्षाओं का पालन करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "जैसा कि मैंने पहले कहा था, यह समय की ज़रूरत है कि हम सभी को सच्चाई और स्थायी शांति को पूरा करने की कोशिश करनी है। लेकिन अफसोस की बात है कि मुस्लिम देश अब दुनिया में अस्थिरता और युद्ध का केंद्र बने हुए हैं, क्योंकि इन देशों की सरकारें और नेता अपने धर्म की शिक्षाओं पर ध्यान नहीं दे रही हैं। लेकिन पश्चिम के निवासियों को भी ख़ुद को इस खतरे से सुरक्षित नहीं मानना चाहिए। क्योंकि इस युग में दुनिया एक वैश्विक समुदाय बन गई है। और दुनिया के एक क्षेत्र में भ्रष्टाचार और फित्नों का प्रभाव केवल उस क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। हम देखते हैं कि मुस्लिम दुनिया में अस्थिरता भी बाकी दुनिया को प्रभावित कर रही है। और वास्तव में, इसका प्रत्यक्ष प्रभाव यहां स्वीडन में भी देखने में मिला है ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "लंबे लंबे सफर करना बहुत आसान हो गया है। पिछले वर्ष के दौरान, अगर करोड़ों ने सही लाखों लोग जंग से प्रभावित क्षेत्र सीरिया और इराक से भाग कर बेहतर भविष्य के लिए यहां पश्चिमी दुनिया में आए हैं। स्वीडिश सरकार और स्वीडिश लोगों के विशाल हृदय के कारण, इस देश ने अपनी आबादी के अनुपात में अपने हिस्से से अधिक स्वीकार कर लिया है। इतने बड़ी संख्या में लोगों को अपने आप में शामिल करना बहुत बड़ी बात है, और साबित करता है कि स्वीडन दयालु और बड़े दिल वाले लोगों से भरा है। आपकी विशाल हृदय यहां आने वाले उन प्रवासियों और शरणार्थियों के लिए एक बड़ी ज़िम्मेदारी लागू करती है जो यहां आए हैं और उन से चाहती है कि वे एक शांतिपूर्ण नागरिक के रूप में यहां आकर रहें और यहां की सरकार और इसके निवासियों के आभारी बनकर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , वास्तव में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें यह शिक्षा दी है जो व्यक्ति अपने साथी का शुक्रिया अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला की शुक्रिया भी अदा नहीं करता। अतः इन मुसलमानों तथा पनाह लेने वालों का यह धार्मिक कर्तव्य है कि इस देश ने इन को यहां रहने तथा यहां से लाभ उठाने की आज्ञा देकर जो उपकार किया है वे इस को हमेशा याद रखें। ये पनाह लेने वाले अमन की तलाश में अपनी पुरानी ज़िन्दगी छोड़ कर निकले थे। और अब जब इन्हें सलामती तथा सुरक्षा मिल गई है उन का फर्ज़ बनता है कि इस देश के अन्दर शान्ति के साथ रहें। और इस देश के कानून का पालन करें। सभी शरणार्थियों का कर्तव्य है कि वे इस समाज का उपयोगी भाग बनें और याद रखें कि इस्लाम के पैगंबर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी है कि बतौर एक मुसलमान देश प्रेम आप के ईमान का अभिन्न हिस्सा है। इसलिए जिस देश ने इन शरणार्थियों को स्वीकार किया कि अब शरणार्थियों का कर्तव्य इस देश के प्रति वफादार होना है और उन्हें अपने कौशल का उपयोग करके इस देश को विकसित और उन्नति देने में मदद करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसके अलावा सरकार भी यह ज़िम्मेदारी है कि वह केवल उन शरणार्थियों को ही बसाने न लगी रहे जिसके परिणाम में उनके वर्तमान नागरिकों के अधिकारों की अनदेखी हो जाए। पहले से ही रिपोर्टें मौजूद हैं कि स्थानीय नागरिकों ने मीडिया से शिकायत की है कि मुहाजरीन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, एक स्थानीय बुज़ुर्ग महिला का ठीक से इलाज नहीं किया गया था और उसे अस्पताल में निवास के दौरान पूरा खाना नहीं दिया गया था, जबकि दूसरी ओर, रोगी को सबसे अच्छे रंग में माना जा रहा था। अल्लाह तआला जानता है कि ये रिपोर्ट कितनी सटीक

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के फज़्ल से आज जमाअत अहमदिया बेल्जियम का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। लंबी अवधि के बाद मैं आपके जलसा में शामिल हो रहा हूं। इस अवधि में, जहां जमाअत में वृद्धि हुई है, दुनिया की दूसरी जमाअतों की तरह अल्लाह तआला के फज़्ल से यहां भी जमाअत में वृद्धि हुई है।

इसके अलावा, यहां कई चीज़ों में तरक्की हुई है। उदाहरण के लिए, आवास घरों में वृद्धि हुई। मस्जिदों और नमाज़ सेन्टर में वृद्धि हुआ है। ब्रसेल्स की मस्जिद का निर्माण लगभग पूरा हो गया है। वह भी एक अच्छी मस्जिद बन रही है। परसों अल्कन में एक मस्जिद का मैंने उद्घाटन किया। अल्लाह तआला ने बहुत बड़ी बिल्डिंग और स्थान जमाअत को प्रदान किया है। इसलिए ज़ाहिर है कि हम देखते हैं कि जमाअत पर यहां बहुत सारे इनाम हुए हैं। परन्तु अल्लाह तआला की यह कृपा यह इहसास भी जमाअत के लोगों में पैदा करने वाली होनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के आदेशों को मानने और समझने में और अनुकरण करने में भी न केवल ज़ाहरी रूप से बल्कि वास्तविक रूप से भी पहले की तुलना में बेहतर हों।

प्रत्येक शामिल होने वाले को जलसा के इस उद्देश्य को सामने रखना चाहिए कि हम अल्लाह तआला के करीब से करीब हों। धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों। और यह रूह केवल अपने अन्दर पैदा न हो बल्कि अपनी औलाद में भी यह रूह फूंकें कि अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है और इन्सानी ज़िन्दगी का उद्देश्य क्या है। एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल के दिल में यह बात बिठाते जाएं कि दुनिया को धर्म का सेवक बनाने के लिए अल्लाह तआला के जो आदेश हैं उन पर चलने की कोशिश करो और आख़री ज़माने में हमारे सुधार के लिए हम पर फज़्ल फरमाते हुए अल्लाह तआला ने जो मसीह मौऊद तथा महदी मौऊद को भेजा है उस की बैअत में आकर हमेशा उस की बातों पर अनुकरण करने वाले बने रहें इसी में हमारी हमारा अस्तित्व है। इसी में हमारी नस्लों का अस्तित्व है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के उपदेशों के हवाले से जलसा सालाना के उद्देश्यों तथा लक्ष्यों का वर्णन और इस दृष्टि से जमाअत को लोगों को महत्त्वपूर्ण नसीहतें।

पाकिस्तान में जलसों पर प्रतिबंध है। यदि वहां से लोग इससे वंचित हैं, तो एम टी ए पर कम से कम नियमित ख़ुत्बों को ही सुना करें, देखा करें, जलसे देखा करें और फिर इस पर अनुकरण करने की कोशिश किया करें। यह भी तो अल्लाह तआला ने एक माध्यम कुछ सीमा तक इस इहसास को दूर करने का फिर खोल दिया है जलसों के प्रोग्रामों को एम टी ए पर देख और सुन कर उन से लाभ उठाने की कोशिश करें तो साठ सत्तर प्रतिशत वंचित होने का इहसास तो दूर हो जाएगा। अगर चाहें तो पाक तबदीली हो तो फिर शत प्रतिशत लाभ हो सकता है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 सितम्बर 2018 ई. स्थान -डिलबीक ब्रसेलज़, बेल्जियम

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला के फज़्ल से आज जमाअत अहमदिया बेल्जियम का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। लंबी अवधि के बाद मैं आपके जलसा में शामिल हो रहा हूं। इस अवधि में, जहां जमाअत में वृद्धि हुई है, दुनिया की दूसरी जमाअतों की तरह अल्लाह तआला के फज़्ल से यहां भी जमाअत में वृद्धि हुई है। पाकिस्तान से यहां हिज़रत करे के आने वाले कई नए लोग यहां शामिल हैं। इसके अलावा, यहां कई चीज़ों में तरक्की हुई है। उदाहरण के लिए, आवास घरों में वृद्धि हुई। मस्जिदों और नमाज़ सेन्टर में वृद्धि हुआ है। ब्रसेल्स की मस्जिद का निर्माण लगभग पूरा हो गया है। वह भी एक अच्छी मस्जिद बन रही है। परसों अल्कन में एक मस्जिद का मैंने उद्घाटन किया। अल्लाह तआला बहुत बड़ी बिल्डिंग और स्थान जमाअथ को प्रदान किया है। इसलिए जाहिर है कि हम देखते हैं कि जमाअत पर यहां बहुत सारे इनाम हुए हैं। परन्तु अल्लाह तआला की यह कृपा यह इहसास भी जमाअत के लोगों में पैदा करने वाली होनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के आदेशों को मानने और समझने में और अनुकरण करने में भी न केवल ज़ाहरी रूप से बल्कि वास्तविक रूप से भी पहले की तुलना में बेहतर हों। और यही नहीं कि बेहतर हों और एक जगह खड़े हो जाएं बल्कि हमारा हर दिन और हर कदम पिछले दिन और पिछले कदम से नेकी और तक्वा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत के उद्देश्य को पूरा करने में तरक्की करता हुआ और आगे बढ़ता हुआ नज़र आए। अपनी बुराइयों को हम पीछे छोड़ चुके हैं और नेकियों नई मंज़िलों को तय कर रहे हों। अगर ये बात जमाअत के लोगों में दिखती हो तो हम कह सकते हैं कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेसत के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया या प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की बैअत का हक अदा करने की कोशिश कर रहे हैं।

अत: इस बात को समझते हुए, हर समय अपनी समीक्षाओं की जरूरत है और विशेष रूप से इन आज़ाद देशों में जहां धर्म के नाम पर और अल्लाह तआला के आदेशों की कोई परवाह नहीं की जाती कि धार्मिक आदेशों की परवाह करनी है या अल्लाह तआला के आदेशों की पाबन्दी करनी है। ये देश इन सब में आज़ाद हैं। इन देशों में, आपको विशेष ध्यान और प्रयास की आवश्यकता है। अन्यथा, इन देशों में, धर्म के नाम पर आकर, अल्लाह तआला की बातों का कोई महत्तव न देना, और दुनिया में पड़ जाना अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बना देता है। यहां आने वालों के अधिकांश लोग धर्म के नाम पर आए हैं। यही कारण है कि आपको अपने देश में अपने धर्म का पालन करने की आज़ादी नहीं। थी। तो इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए। अन्यथा, यह बात याद रखें कि यहां आए और धर्म के नाम पर आए अल्लाह तआला नेक नाम पर आए और फिर अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण न किया तो ये बातें अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बना सकती है। परन्तु इन्सान कमज़ोर है इसलिए कमज़ोरी के कारण दुनिया की तरफ झुकाव भी हो जाता है एस सीमा तक दुनिया की तरफ ध्यान देना पर दुनियादारों की तरह

दुनिया पर गिरना इस बात से अल्लाह तआला ने मना फरमाया है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने बहुत स्पष्ट खोल कर वर्णन फरमाया है।

एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने दुनिया का कामों को जायज़ रखा है। जो दुनिया के काम हैं व्यस्तता है, जायज़ है। इन में कोई गुनाह नहीं क्योंकि अगर ये न होते तो इस मार्ग से भी परीक्षा आती। इस परीक्षा के कारण इन्सान चोर, जुआरी, ठग, डकेत बन जाते हैं। और क्या क्या बुरी आदतें धारण कर लेता है। फरमाया परन्तु प्रत्येक चीज़ की हद होती है। दुनिया के कामों को इस सीमा तक धारण करो कि वह धर्म के मार्ग में तुम्हारे लिए मदद का सामान पैदा कर सकें। और मूल लक्ष्य इस में धर्म ही हो। फरमाया अत: हम दुनियावी कामों से मना नहीं करते। जो दुनिया की व्यस्तता हैं इस में मनाही नहीं है। परन्तु इस शर्त के साथ कि असल उद्देश्य इस में धर्म होना चाहिए। अत: एक धार्मिक आदमी के लिए उस आदमी के लिए जो अपने आप को अल्लाह तआला की धर्म पर चलने वाला कहता है यह बुनियादी उसूल है कि दुनिया कमाओ जिन्दगी की ज़रूरत पूरी करने के सामान पैदा करो। अपने बीवी बच्चों के खर्च अपनी घरेलू ज़िम्मेदिरयां अदा करने की कोशिश करो ये तुम्हारे लिए ज़िम्मा है उनके लिए, व्यवसाय, काम और रोजगार करना भी जरूरी है। लेकिन ये काम, ये व्यवसाय, तुम्हें पैसा कमाने में इतनी सीमा तक व्यस्त न कर दे, इस में इस सीमा तक न डूब जाओ कि फिर धर्म की फिक्र ही न रहे और सारी सभी चिंताएं पूरी तरह दुनिया के बारे में घूमती हों। दुनिया भी कमानी है, क्योंकि अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार, पत्नी बच्चों के हक अदा करने हैं। अल्लाह तआला की सृष्टि के हक अदा करने हैं। अल्लाह तआला के धर्म की सेवा करना है। यह उद्देश्य होगा तो दुनिया भी मिलेगी और धर्म भी मिलेगा। आपने फिर से यह भी फरमाया कि यह न हो कि रात दिन केवल दुनिया के धंधों और बखेड़ों में डूब जाओ ख़ुदा तआला का ख़ाना भी दुनिया से भर दो यह न हो कि अल्लाह तआला की हक देना है वह भी दुनिया की व्यस्तता में गुज़ार दो। फरमाया कि अगर कोई इस प्रकार करता है तो वह वंचित रहने का साधन पहुंचाता है और उस की जीभ पर केवल दावा ही रह जाता है।(मलफूज़ात भाग 2 पृष्ठ 73 प्रकाशन 1985 ई)

अत: अगर दुनिया में डूब गए तो धर्म से वंचित हो गए और जब धर्म से वंचित हो गए तो धर्म का दावा और बैअत का दावा और अल्लाह तआला पर विश्वास का दावा केवल दावा है इससे ज्यादा इस का कोई महत्त्व नहीं है और उसकी कोई सच्चाई नहीं है। कहने को तो हम अहमदी हैं परन्तु अगर हम दुनिया की तरफ बढ़ गए अधिक इस में डूब गए तो कर्म हमारे वही हैं जो दूसरों के हैं।

फिर इस बात को और अधिक एक स्थान पर स्पष्टीकरण करते हुए कि दुनिया को प्राप्त करने का उद्देश्य धर्म होना चाहिए। आप अलैहिस्सालम ने एक स्थान पर फरमाया इस्लाम ने रहबानियत को मना फरमाया है। यह कायरों का काम है। दुनिया के कट जाना यह तो कायरों का काम है। फरमाया कि मोमिन का सम्बन्ध दुनिया से जितने अधिक होंगे वह इस के उच्च स्तर के लिए होंगे क्योंकि उस का लक्ष्य धर्म होता है और दुनिया तथा इस का माल उस का सेवक होते हैं। अर्थात दुनिया भी और दुनिया में जो चीज़ें धर्म की सेवा के रूप में काम आती हैं। इस के मान सम्मान धर्म के लाभ के लिए काम आता है। इस की दौलत भी धर्म के काम के लिए होती है। मानो कि आप ने जो वर्णन फरमाया इस का उद्देश्य यही है कि दुनिया की दौलत एक इस प्रकार की सवारी है जिस की पीठ पर इन्सान को धर्म की उच्च मन्ज़िलों तक पहुंचना है। जब वह मार्ग में प्रयोग होने वाली चीज़ें जो इन्सान अपनी आसानी के लिए सफर में लेता है अच्छी सवारी और सफर की सुविधा का सामन इन्सान इसलिए करता है ताकि आसानी से मूल मन्ज़िल तक पहुंच सके। अत: इस तरह दुनिया को प्राप्त करने के लिए प्रयोग करो। और धर्म का सेवक बनाओ। न यह कि ख़ुद दुनिया के सेवक बन कर धर्म को छोड़ दो। फिर आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने जो यह दुआ फरमाई है कि

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

इस में दुनिया को प्राथमिकता दी है। फरमाया इस में दुनिया को प्रथम किया है परन्तु किस दुनिया को? फरमायी हसनातुद्दुनिया को प्राथमिकता दी है। जो अख़रत में भलाई का कारण हो। फरमाया कि इस दुआ की शिक्षा से साफ समझ आ जाता है कि मोमिन को दुनिया के प्राप्त करने में हसनातुल आख़रत का ध्यान रखना चाहिए। और साथ ही हसनातुद्दुनिया के शब्द में इन सारे उत्तम माध्यम प्रयोग करने का वर्णन आ गया जो मोमिन मुसलमान को धर्म प्राप्त करने के लिए धारण करने चाहिए। दुनिया को प्रत्येक उस तरीका से धारण करो जिस का धारण करने में भलाई और ख़ूबी हो। न वह कारण जो किसी दूसरे मानव के कष्ट का कारण हो। न अपने साथ वालों में किसी लज्जा और शर्म का कारण। इस प्रकार की दुनिया नि:सन्देह आख़रत की भलाई का कारण होती है।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 91-92 प्रकाशन 1985 ई यू के)

अत: हम में से प्रत्येक की यह कोशिश होनी चाहिए कि दुनिया कमाएँ जो आख़रत की हसनात का भी सबब हो, न कि यहाँ रंगीनियों में खो कर अपने लक्ष्य को भूल जाएं, और अगली दुनिया में हसनात लेने की बजाय, अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बनें। और फिर दुनिया की रंगीनियां और आन्नद इस प्रकार के हैं कि जो मनुष्यों में अधिक बेचैनियां पैदा करती हैं। अपनी तरफ से इन्सान सोचता है कि दुनिया में मुझे शान्ति मिल जाएगी लेकिन वास्तव में शान्ति नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम इस बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए फरमाते हैं कि यह मत ख्याल करो कि कोई सारी दौलत या हकूमत माल तथा इज्ज़त औलाद की अधिकता किसी आदमी के लिए राहत तथा संतोष और शांति का कारण हो सकती है और वह वास्तविक रूप से जन्नती होता है अर्थात मानो वह जन्नत में है या उसे यह जन्नत मिल गई जो तुम समझते हो। फरमाया हरगिज़ नहीं वास्तव में वह शांति और संतोष जो बहशत के नामों में से है जिससे जन्नत मिल सकती है वह इन बातों से नहीं मिलती वह खुदा में ज़िंदा रहने और मरने से मिल सकती है जिसके लिए अंबिया अलैहिस्सलाम विशेष रूप से इब्राहिम और याकूब अलैहिस्सलाम की यही नसीहत थी कि

فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ

अत: हरगिज़ ना मरना मगर इस अवस्था में कि तुम अल्लाह के पूरे आज्ञाकारी हो अर्थात यह कि तुम्हें हर समय अल्लाह तआला की आज्ञा पालन की अवस्था में रहना चाहिए मौत का कोई समय निर्दिष्ट नहीं है यह ना हो कि मौत आ जाए और तुम आज्ञापालन से बाहर हो। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि दुनिया के आनंद तो हर एक प्रकार के अपवित्र इच्छाओं को पैदा करके तलब और प्यास को बढ़ा देते हैं प्यास के मरीज़ की तरह प्यास नहीं बुझती। वह मरीज़ जिसको बीमारी हो पानी पीने की उसकी प्यास बुझती ही नहीं पीता चला जाता है यहां तक कि वह हलाक हो जाता है। अत: व्यर्थ हसरतों इच्छाओं की आग भी इसी तरह की एक जहन्नम की आग है जो इंसान के दिल को शांति और स्थिरता नहीं लेने देती बल्कि इसको शंका और व्याकुलता में डुबोए रखती है फरमाया के इसलिए मेरे दोस्तों की नज़र से यह बात हरगिज़ ना छुपी रहे कि इंसान माल दौलत औरत या पुत्र की मोहब्बत के जोश और नशा में ऐसा दीवाना और पागल ना हो जाए कि उसमें और खुदा में एक पर्दा हो जाए।(उद्धृत मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 101, 102 प्रकाशन 1985 यूके) अर्थात अगर दुनिया की चीज़ों में ज़रूरत से ज्यादा डूब जाओगे तो फिर ऐसी अवस्था पैदा हो जाती है कि अल्लाह तआला और खुदा में पर्दा हो जाता है रोक खड़ी हो जाती है पर्दा बीच में आ जाता है। ना बंदा खुदा की तरफ बढ़ता है न खुदा बंदे की तरफ आता है। अल्लाह तआला ने फरमाया है कि मेरी तरफ आने की कोशिश करेगा तो मैं उसकी तरफ आऊंगा। जैसा कि हदीस में भी आया है कि बंदा एक कदम आएगा तो मैं दो कदम आऊंगा। आएगा तो मैं दौड़ कर आऊंगा।(सहीह बुख़ारी हदीस 7405) अर्थात यदि इस पर्दा और रोक को दूर करना है तो दुनिया को धर्म का गुलाम बनाकर ही दूर किया जा सकता है। आपने अधिक फरमाया के माल तथा औलाद इसीलिए तो फितना कहलाती है कि वे बंदे और खुदा में एक रोक पैदा कर देती हैं। आप फरमाते हैं उनसे अर्थात माल और दौलत से भी इंसान के लिए एक नर्क तैयार होती है और जब उनसे अलग किया जाता है तो बहुत व्याकुलता और घबराहट प्रकट करता है। आप फरमाते हैं दो चीज़ों के आपस के संबंध और रगड़ से गर्मी पैदा होती है। हाथों को भी रगड़ कर देख लो तो उससे भी गर्मी पैदा होती है। पत्थरों को रगड़ो तो उस से गर्मी पैदा होती है इसी तरह पर इंसान की मुहब्बत और दुनिया और दुनिया की मुहब्बत की रगड़ से जो गर्मी पैदा होती है उससे अल्लाह तआला की मुहब्बत जल जाती है अल्लाह की मुहब्बत फिर समाप्त हो जाती है इंसान की मुहब्बत और दुनिया की मुहब्बत जब आपस में रगड़ें तो फिर क्या परिणाम निकलेगा? कि अल्लाह की मुहब्बत समाप्त हो जाएगी और अंधेरे में पड़ कर ख़ुदा से दूर हो जाता है और प्रत्येक प्रकार की व्याकुलता का शिकार हो जाता है परंतु जब दुनिया की चीजों से जो संबंध हो वह खुदा में होकर हो। दुनिया की चीज़ों का जो सम्बन्ध है वह

ख़ुदा में होकर हो और उनकी मुहब्बत खुदा की मुहब्बत में होकर हो। दुनिया की चीजों की मुहब्बत भी इसलिए हो अल्लाह तआला ने एक सीमा तक उनसे मुहब्बत करना जायज़ करार दिया है और खुदा की मुहब्बत से होकर होगी और उस समय खुदा ना भूले तो फिर क्या होगा? फरमाया कि उस समय आपस में रगड़ से अल्लाह के अतिरिक्त जो मुहब्बत है वह जल जाती है जब रगड़ पैदा होगी तो अल्लाह के अतिरिक्त जो हैं उनकी मुहब्बत समाप्त हो जाएगी और उसके स्थान पर एक रोशनी और नूर भर जाता है फिर ख़ुद की इच्छा उस की इच्छा और उस की इच्छा खुदा की इच्छा हो जाती है। फिर बन्दा इस बात पर राज़ी हो जाती है और वही चाहता है जो अल्लाह तआला चाहता है आप फरमाते हैं कि इस के विपरीत को कुछ इन्सान की अवस्था है वह जहन्नम की अवस्था है मानो अल्लाह तआला की अतिरिक्त ज़िन्दगी व्यतीत करना यह भी जहन्नम है।(उद्धृत मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 102, 103 प्रकाशन 1985 यू.के) आप फरमाते हैं कि ख़ुदा तआला तुमसे यह चाहता है कि तुम पूरे मुसलमान बनो मुसलमान का शब्द ही इस बात को बताता है कि संपूर्ण रूप से उसके लिए हो जाओ अर्थात संपूर्ण तौर पर ख़ुदा की तरफ झुको यह नहीं कि अभी ख़ुदा तआला की तरफ झुक गए और जब दुनिया के लाभ देखे तो दुनिया की तरफ झुक गए ख़ुदा भूल गया। आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुसलमान को मुसलमान पैदा करके असीमित फज़ल किए हैं शर्त यह है कि वह ध्यान दें और समझे। (उद्धृत भाग 2 पृष्ठ 304 प्रकाशन 1985 ई यू. के) जैसा कि मैंने कहा था कि इंसान कमज़ोर है कई बार दुनिया के दिलचस्पियां अपनी तरफ खींचने की कोशिश करती हैं इंसान दुनिया की तरफ झुक जाता है और अल्लाह तआला और उसके धर्म के धर्म की तरफ से अज्ञान हो जाता है या कुछ कर्मों में कमज़ोरियां पैदा हो जाती हैं। अल्लाह तआला के समस्त आदेशों को इंसान पूरी तरह सामने नहीं रखता। हक अदा नहीं करता। बच्चों के हक अदा नहीं किए। पारिवारिक समस्याएं पैदा हो गईं। घरों में लड़ाइयां हैं या अपने कारोबार में ईमानदारी से काम नहीं किया या कारोबार की वजह से नमाज़ें छोड़ दीं और बहुत सारी बातें हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने इंसान को इस कमज़ोरी से निकालने के लिए भी प्रबंध किया हुआ है और हम अहमदी बहुत भाग्यवान हैं कि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को स्वीकार करने की तौफीक़ दी जो हमें बार-बार विभिन्न अवसरों पर रास्ते से भटकने से बचाने के लिए मार्गदर्शन फरमाते रहते हैं।

फिर आपने अल्लाह तआला की आज्ञा से एक यह भी प्रबंध फरमाया के जलसों का आयोजन फरमाया जहां हम साल में एक बार जमा होकर अपनी आध्यात्मिक उन्नति का सामान करने की कोशिश करते हैं। अत: हर शामिल होने वाले को जलसा के इस उद्देश्य को हमेशा सामने रखना चाहिए कि हम अल्लाह तआला के निकटतम हों। धर्म को प्राथमिकता करने वाले हों और दुनिया में रहते हुए दुनिया को धर्म का सेवक बनाने वाले हों और यह रूह केवल अपने अंदर पैदा ना करें बल्कि अपनी औलाद में भी यह रूह फूंके कि अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है और इंसान के जीवन का उद्देश्य क्या है नस्ल के बाद नस्ल इस बात को अपनी औलादों के दिलों में बिठाते चले जाएं कि दुनिया को धर्म का सेवक बनाने के लिए अल्लाह तआला के जो आदेश हैं उन पर चलने की कोशिश करो और इस युग में हमारे सुधार के लिए हम पर दया करते हुए अल्लाह तआला ने जो हज़रत मसीह मौऊद और महद मौऊद को भेजा है उसकी बैअत में आकर हमेशा उसकी बातों पर अनुकरण करने वाले बने रहें कि इसी में हमारी बका है इसी में हमारी नस्लों की बका है

हजरत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम इस उद्देश्य का वर्णन करते हुए एक स्थान में फरमाते हैं कि बैअत के सिलसिला में शामिल समस्त श्रद्धालुओं पर प्रकट हो कि "बैअत करने से उद्देश्य यह है ताकि दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो और अपने मौला करीम और रसूले मकबूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत दिल पर विजय प्राप्त करे और ऐसी अवस्था इन्कता की पैदा हो जाए जिससे आख़रत का सफर मकरूह मालूम ना हो।" (आसमानी फैसला रूहानी ख़ज़ायन भाग 4 पृष्ठ 351) अत: के अल्लाह तआला और उसके रसूल से पूर्ण मुहब्बत ना हो तो ना ही दुनिया की मुहब्बत में कमी आ सकती है ना ही इंसान को मरते समय शांति मिल सकती है और ना ही मरते समय की बेचैनी दूर हो सकती है यह है वह उद्देश्य जिसके लिए अल्लाह तआला ने आपके द्वारा यह सिलसिला स्थापित करवाया और हमें इसमें शामिल होने की तौफीक़ दी और जिसके लिए आप ने बैअत ली और बैअत करने वालों पर इस उद्देश्य को स्पष्ट फरमाया अगर इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हम कोशिश नहीं कर रहे तो हमारे बैअत के दावे केवल दावे हैं और वास्तव में ना ही हम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को पहचाना है ना ही आपको स्वीकार किया है ना ही हम बैअत का हक अदा करने वाले हैं।

शुरू में जब जलसों का आरम्भ हुआ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को जब यह पता चला कि जलसा के उद्देश्य को लोग पूरा नहीं कर रहे। तो आप ने बहुत कठोर नाराज़गी को प्रकट करते हुए फरमाया इस वर्ष में जलसा का आयोजन नहीं करूंगा। और उस साल जलसा आयोजित नहीं हुआ। और उसके मुल्तवी करने का जो ऐलान आपने फरमाया वह ऐसा है कि हर मुखलिस को आज भी व्याकुल करने वाला है और बेचैन करने वाला होना चाहिए। आप ने फरमाया कि "इस जलसा से उद्देश्य और मतलब यह था कि हमारी जमाअत के लोग कुछ बार-बार की मुलाकातों से एक ऐसी तब्दीली अपने अंदर पैदा करें कि उनके दिल आख़रत की की तरफ पूरी तरह झुक जाएं और उनके अंदर खुदा तआला का भय पैदा हो वह नेकी और तक्वा और ख़ुदा तआला के भय एवं परहेज़गारी और दिल की नर्मी और आपस की मुहब्बत और भाईचारा में दूसरों के लिए एक नमूना बन जाऐं और विनय और सच्चाई उन्हें पैदा हो और धार्मिक कामों के लिए एक तेज़ी धारण करें।

(शहादतुल कुरआन रूहानी खज़ायन भाग 6 पृष्ठ 394)

फिर फरमाया " यह जलसा ऐसा तो नहीं है कि दुनिया के मेलों की तरह चाहो न चाहो इस का प्रावधान अनिवार्य है बल्कि इसका आयोजन नेक निय्यत और उत्तम परणिामों पर निर्भर है, अन्यथा बिना उसके व्यर्थ।

(शहादतुल कुरआन, रूहानी खज़ायन जिल्द 6 पृष्ठ 395) अगर इरादे सही नहीं और अच्छे फल नहीं मिल रहे। वे लक्ष्य हासिल नहीं हो रहा जिसके लिए जलसा आयोजित किया गया है, तो यह बिल्कुल व्यर्थ है, इसका कोई लाभ नहीं।

आपने जो यह फरमाया कि बार बार कि मुलाकातों से अपने अन्दर यह तब्दीलियां पैदा करे। ये किस प्रकार की मुलाकातें हैं। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के साथ मुलाकातें हैं। अत: अगर इस प्रकार के लोग जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय अपनी कमज़ोरियों के कारण सेहज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की नाराज़गी का कारण बने तो आज कल तो अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि संख्या के लिहाज़ ले हम कितने हैं और हमारी क्या अवस्था है जो इस गिनती में आते हैं । उन लोगों में आते हैं जिन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नाराज़गी व्यक्त की। अत: इस दृष्टि से प्रत्येक को अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि अगर वे स्तर नहीं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम चाहते हैं तो फिर हम जलसा में शामिल होने के हकदार भी नहीं हैं। या यह देखें कि हम हकदार हैं या नहीं? या सिर्फ इसलिए जन्मजात अहमदी हैं या पुराने अहमदी हो गए हैं कई सालों से बैअत करके या बुजुर्गों बाप दादाओं की औलाद हैं इसलिए शामिल हो रहे हैं तो फिर वह मकसद पूरे नहीं कर रहे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम हमसे चाहते हैं या इस नियत से नहीं आए कि हमने यह उद्देश्य प्राप्त करने की अपनी सारी चेष्टाओं से कोशिश करनी है या करते रहे हैं या कर रहे हैं तो फिर अगर यह नहीं तो फिर जलसों में आना एक मेले पर आना ही है अत: इस बात से हर एक श्रद्धालु अहमदी के दिल में एक चिंता पैदा होनी चाहिए अब तो हर साल दुनिया के विभिन्न देशों के जलसे होते हैं कुछ में मैं शामिल होता हूं कुछ पर एम टी ए माध्यम से सम्मिलित हो जाता हूं। यूरोप के कुछ जलसों आप में से बहुत से शामिल होते हैं इस समय भी मेरे सामने बैठे हुए हैं जो कई जलसों में शामिल हुए यूके के जलसा के बाद जर्मनी के जलसा में शामिल होकर आए हैं और हर जलसा पर जलसा के उद्देश्य और धार्मिक उन्नति और तरक्की की बातें होती हैं और बहुत से लोग मुझे लिखते हैं कि एक विशेष माहौल था इसमें हमने देखा आपस में भाईचारे के नज़ारे हमने देखे लोग यह भी लिखते हैं कि हमारे साथ कुछ मेहमान गए हुए थे वे भी यह माहौल देखकर बड़े प्रभावित हुए। अत: इन बातों की वजह से और साल में एक से अधिक जलसों में शामिल होने के कारण एक इंकलाब हमारी अवस्था में आ जाना चाहिए कहां तो वह ज़माना जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना में साल में एक बार में जलसा में शामिल होते हैं ताकि हमारे अन्दर इस प्रकार की पवित्रता पैदा हो कि आख़रत का सफर घृणित मालूम न हो और अल्लाह तआला और उस की सृष्टि के अधिकार अदा करने की तरफ एक विशेष ध्यान पैदा हो। और कहां अब यह अवस्था है कि कुछ लोग साल में एक से अधिक जलसों में शामिल होते हैं अत: समीक्षा करें कि इस प्रकार की अवस्था में क्या परिवर्तन पैदा हो जाना चाहिए। बेशक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से एक मुलाकात ही कई जलसों से भारी थी और आप से मिलकर एक इन्कलाब आ जाता था। बहरहाल

नबी का एक स्थान होता है। परन्तु अब निरन्तर कई जलसों को देखना और उस में शामिल होना कुछ तो नेक तब्दीली पैदा करने का कारण होना चाहिए। बातों तो अब भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की वर्णन की जाती हैं शब्द तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ही वर्णन किए जाते हैं। और फिर इस से बढ़ कर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शब्द है और बातें हैं जो विभिन्न तकरीरों में वर्णन की जाती हैं। और इस से भी बढ़ कर अल्लाह तआला के कलाम की तफसीरें वर्णन की जाती हैं । तो अगर इंसान का इरादा हो, नेक नियत हो तो पवित्र तब्दीली के सामान अब भी मौजूद है समय का ख़लीफा आप से कुछ कहता है तो वह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के प्रतिनिधित्व में ही कहता है। खिलाफत के जारी रहने और उसके साथ संबंधित होकर आप अलैहिस्सालम की बरकतों को निरंतर स्थापित करने की ख़ुशखबरी भी तो अल्लाह तआला से खबर पाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने दी थी जिस के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया था कि इन बरकतों के अर्थात ख़िलाफत के जारी रहने का वादा तुम्हारे बारे में है अत: इस दृष्टि से आज मैं इस अवसर से इस विषय से लाभ उठाते हुए एम टी ए सुनने की तरफ ध्यान दिलाता हूं।

पाकिस्तान में जलसों पर प्रतिबंध है। यदि वहां से लोग इससे वंचित हैं, तो एम टी ए पर कम से कम नियमित ख़ुत्बों को ही सुना करें, देखा करें, जलसे देखा करें और फिर इस पर अनुकरण करने की कोशिश किया करें। यह भी तो अल्लाह तआला ने एक माध्यम कुछ सीमा तक इस इहसास को दूर करने का फिर खोल दिया है जलसों के प्रोग्रामों को एम टी ए पर देख और सुन कर उन से लाभ उठाने की कोशिश करें तो साठ सत्तर प्रतिशत वंचित होने का इहसास तो दूर हो जाएगा। अगर चाहें तो पाक तबदीली हो तो फिर शत प्रतिशत लाभ हो सकता है। लेकिन आप लोग जो अब यूरोप में आ गए हैं, मैं आपको बताता हूं कि आप जलसों में शामिल हो रहे हैं और कुछ एक से अधिक जलसों में शामिल हो रहे हैं। यहां आने वाले अहमदियों को जैसा कि मैंने कहा था, यहां आने वाले अहमदी को अपनी स्थिति में एक इन्कलाब पैदा करना चाहिए। यह प्रशिक्षण शिविर जो अल्लाह तआला ने मयस्सर फरमाए हैं इसमें आने का लाभ तो तभी है जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छाओं के अनुसार दुनिया को अपना ख़ादिम बनाकर एक पवित्र बदलाव पैदा करने की कोशिश करने वाले बनें। यहां आकर जलसा की कारवाई को ध्यान से सुनें और इस निय्यत से सुनेंकि हम ने इस पर अनुकरण करना है। ताकि अपने अन्दर नेक तब्दीलियां पैदा कर सकें।

जलसा की कार्यवाही को ध्यान से सुनने की तरफ ध्यान दिलाते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया कि "सभी को ध्यान देकर सुनने चाहिए और पूरे विचार और चिंता के साथ सुनो क्योंकि यह मामला ईमान का मामला है। यह वाक्य जो आप ने फरमाया "यह मामला ईमान का मामला है " यह कोई मामूली बात नहीं है। कोई मामूली वाक्यांश नहीं है,ध्यान देने वाला मामला है यह मामला ईमान का मामला है। इसमें सुस्ती और लापरवाही और ग़ैर ध्यान बहुत बुरे परिणाम पैदा करती है। फरमाते हैं कि "जो लोग ईमान में लापरवाही से काम लेते हैं और जब उन्हें संबोधित कर के कुछ वर्णन किए जाए तो ध्यान से उस को नहीं सुनते। उन को बोलने वाले के वर्णन से चाहे वह कैसा ही उच्च स्तर का तथा प्रभावी क्यों न हों कुछ भी लाभ नहीं होता। इस प्रकार के लोग होते हैं जिन के बारे में कहा जाता है वे कान रखते हैं परन्तु सुनते नहीं। दिल रखते हैं परन्तु समझते नहीं। अत: याद रखो जो कुछ वर्णन किया जाए उसे ध्यान से सुनो क्योंकि जो ध्यान से नहीं सुनता चाहे लम्बे समय तक लाभ देने वाली हस्ती की संगत में रहे उस से कुछ भी लाभ नहीं उठा सकत।"

(उद्धरित मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 142-143। संस्करण 1985 प्रकाशन इंग्लैंड)

तो यह आप ने उन लोगों को सचेत किया जो जलसा में शामिल होने के बावजूद जलसा से लाभ नहीं उठाते। नारे तो बहुत ज़ोर से लगाते हैं बहुत ज़ोर से कहते हैं परन्तु अल्लाह तआला की प्रशंसा की यह घोषणा और नारे कुछ क्षणों बाद ही दिल तथा दिमाग़ से ग़ायब हो जाते हैं। अत: प्रत्येक अपनी समीक्षा करे कि कहीं हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के अनुसार कहीं उन लोगों में शामिल न हो जाएं। जिन को जलसा कोई लाभ नहीं दे रहा।

अत: जब यहां जलसा में शामिल होने के लिए आए हैं तो जलसा की सारी कारवाई में शामिल हों। और सारी तकरीरें ध्यान से सुनें। और उन से ज्ञान वर्धक और व्यवहारित रूप से लाभ उठाना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तकरीरों को ध्यान से सुनने की तरफ ध्यान दिलाते हुए फरमाते हैं कि" सब लोग ध्यान लगा कर सुनें मैं अपनी जमाअत और ख़ुदा अपनी ज़ात के बारे में और अपने नफ्स के लिए यही कहना पसन्द करता हूं कि ज़ाहरी बातें तो तकरीरों में होती हैं उस को पसन्द न किया जाए और सारी उद्देश्य आकर उस पर ही न ठहर जाए कि बोलने वाला कैसी जादू भरी तकरीर कर रहा है। शब्दों में किस प्रकार ज़ोर है मैं इस बात पर राज़ी नहीं होता।" सिर्फ तकरीर करने वाले की जो तकरीर है इस पर मैं राज़ी नहीं होता फरमाया कि मैं तो यह पसन्द करता हूं और न बनावट तथा दिखावे से बल्कि मेरी तबीयत और फितरत की यही मांग है।" यही मेरी तबीयत चाहती है कि जो काम अल्लाह तआला के लिए हो जो बात हो ख़ुदा तआला के लिए हो।"

(उद्धरित मस्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 398-399 प्रकाशन 1985 ई यू के)

मुसलमानों में पतन और गिरावट आने का यह बड़ा भारी कारण है अन्यथा इस कदर सम्मेलन और यूनियन और मज्लिसें होती हैं और वहाँ बड़े-बड़े वक्ता और व्याख्याता अपने व्याख्यान और तकरीरें पढ़ते हैं, कवि क़ौम की स्थिति पर नोहा करते हैं। वह क्या बात है कि इस का कुछ भी प्रभाव नहीं होता है। क़ौम दिन प्रतिदिन तरक्की की तरफ ही जाती है।" फरमाया कि " इन मज्लिसों में आने वाले श्रद्धा लेकर नहीं जाते।" (उद्धरित मल्फूज़ात भाग 1 पेज 401 संस्करण 1985 ई) श्रद्धा नहीं केवल ज़ाहरी बातें ही तकरीर करने वालों की तकरीरें हैं और सुनने वाले केवल आन्नद उठा रहे हैं उन में श्रद्धा नहीं है।

अत: यह है आप की हार्दिक इच्छा। यह है आपकी इच्छा अपने मानने वालों के लिए कि सामयिक तौर पर तकरीर के और तकरीर करने वाले के जोश से कोई प्रभावित ना हो बल्कि विषय को समझ कर अपनी जिंदगियों का हिस्सा बनाएं अगर केवल तकरीरों को सुनना और जलसा गाह से बाहर आकर उसको भुला देना है तो तो यह तरक्की नहीं बल्कि पतन की तरफ ले जाने वाली बातें हैं और मुसलमानों की आजकल जो ज़िल्लत और पतन की अवस्था है वह इसलिए है कि बड़े-बड़े तकरीर करने वाले तकरीर तो सुन लेते हैं परंतु अनुकरण नहीं करते। अनुकरण बिल्कुल ना होने के बराबर है बल्कि है ही नहीं और जिस क़ौम में अनुकरण न हो वह कभी तरक्की नहीं कर सकती। दुनिया में आज मुसलमानों की जो अवस्था है इस बात का मुंह बोलता प्रमाण है कि केवल बातें हैं और कर्म नहीं अगर कर्म होता तो आज यह अवस्था न होती। अत: जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को हम ने स्वीकार किया है इस लिए वे कमज़ोरियां जो मुसलमानों में पैदा हो गई हैं उनको दूर किया जाए वरना लाभ नहीं। हम एक तरफ तो यह दावा करते हैं कि दुनिया को हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे लेकर आना है दूसरी तरफ दुनिया विजय हो रही है और जलसा और जलसा पर आना भी इसलिए हो कि कुछ दोस्तों को मिलेंगे और कुछ जलसा सन लेंगे। दोस्तों को मिलना भी अच्छी बात है परंतु जलसे का आंशिक लाभ है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने वर्णन फरमाया है और आंशिक लाभ भी बिना लाभ के नहीं है बल्कि उस से आपने फरमाया के भाईचारा और प्रेम पैदा हो। अहमदियों का आपस में भाईचारा और प्यार पैदा हो, अल्लाह के अधिकारों के अदा करने की तरफ ध्यान पैदा हो और जमाअत

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

की मज़बूती और एक होने का दृश्य प्रत्येक स्थान पर नजर आए।

अत: यहां आने का वास्तविक उद्देश्य को अपने सामने रखें। जो जलास सुनना और इन बातों पर अनुकरण करना है उन को यहां सुनें। अल्लाह तआला प्रत्येक को यह उद्देश्य प्राप्त करने की तौफीक प्रदान करे। जलसा की बरकतों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं की बरकतों से लाभ उठाने वाले हों और अपने कथन और कर्म से दुनिया को इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दिखाने वाले हों। दुनिया हमेशा एक अहमदी के लिए गौण स्थान रखने वाली हो। और वास्तविक उद्देश्य तथा लक्ष्य धर्म हो। और अल्लाह तआला की प्रसन्नता हो। अल्लाह तआला की प्रसन्नता को जा समझ जाए। वे अल्लाह तआला का हक अदा करने वाला बन जाता है। और उस की सृष्टि का हक अदा करने वाला बन जाता है या बन सकता है। अमन प्यार मुहब्बत भाईचारा पैदा करने वाला बन सकता है और इस चीज़ की आज दुनिया को सब से अधिक ज़रूरत है। दुनिया में जो अफरा तफरी है इस को अगर दूर करना है तो सिर्फ इस अवस्था में है कि हम दुनिया को अपने ख़ुदा का पहचानने की तरफ ले आएं। सृष्टि के हक अदा करने की तरफ ले कर आएं और आज यह एक अहमदी की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। इस दृष्टि से प्रत्येक को ध्यान देना चाहिए।

जलसा के संबंध में कुछ प्रशासनिक बातें भी करना चाहता हूं। सबसे पहले, जलसा के लिए इस जगह के परिवेश में ध्यान रखें, न ही प्रशासन को कोई तकलीफ हो, न बाहर निकलते हुए पड़ोसियों को कोई कष्ट हो। इस बात को बहरहाल सुनिश्चित किया जाना चाहिए। ग़ैर-मुसलमानों को इस्लाम का तभी सही मार्ग पता चल जाएगा जब यह प्रकट होगा कि अहमदी किस प्रकार पडोसियों का ध्यान रखने वाले हैं और कानून की पाबन्दी करने वाले हैं और बावजूद इतनी संख्या होने के किसी प्रकार की परेशानी का कारण नहीं बन रहे। बल्कि जलसा का प्रबन्ध करने वाले भी विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखें और प्रबन्ध करने चाहिए। यद्यपि यह संख्या कुछ देशों की जलसों की संख्या से तो कम है परन्तु बल्कि कुछ स्थान पर जहां जमाअतें अधिक हैं वहां तो ख़ुद्दामुल अहमदिया के इज्तिमा में संख्या इस से अधिक होती है परन्तु इस देश की दृष्टि से, यहां कि संख्या की दृष्टि से, यहां के प्रबन्ध करने वालों के प्रबन्ध करने की दृष्टि से यह इस समय बहुत बड़ी संख्या है। फिर जलसा के दिनों में जो असल उद्देश्य है दुआओं का उस को भी सामने रखें। दरूद पढ़ते रहें। ज़िक्रे इलाही से अपनी ज़ुबानों को जारी रखें। नमाज़ों के समय में भी यहां अगर नमाज़ें हो रही हैं या मिशन हाऊस में नमाज़ें हो रही हैं तो समय पर आएं। और दो दिन से विशेष रूप से नोट कर रहा हूं कि लोग मिशन हाऊस लेट आते हैं। फिर जल्दी-जल्दी चल कर जब आते हैं तो लकड़ी के फर्श के कारण से शोर होता है। आवाज़ पैदा होती है। तो पहले आकर बैठा करें ताकि दूसरों की नमाज़ें ख़राब न हों। जलसा की तकरीरों को मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूं कि ध्यान से सुनें। और उस के लिए यह नियमित प्रबन्ध रखें कि जलसा के समय में प्रत्येक प्रोग्राम में शामिल होना है। और तक़रीरें सुननी हैं। इसी तरह फिर अपने बच्चों को और अगली नस्लों की तरबियत कर सकते हैं। इन में यह इहसास पैदा कर सकते हैं कि जलसे का क्या महत्त्व है। और हम ने जलसा की तकरीरों को सुनना है। अत: इस दृष्टि से भी ख्याल रखें। जलसों में आपस में मतभेद पैदा हो जाते हैं। कुछ लोगों के पुराने झगड़े चल रहे होते हैं। और जब इकट्ठे होते हैं तो फिर उभर के सामने आ जाते हैं। इस लिए इस माहौल को इस लिहाज़ से बहुत पाक साफ रखें। किसी भी प्रकार की कोई ऐसी बात न हो जो किसी भी प्रकार एक दूसरे के लिए दिल दुखाने का कारण न बने और इस कारण से फिर लोगों में भी ग़लत प्रभाव न हो। मुझे नहीं पता कि प्रबन्ध करने वालों ने संख्या को ध्यान में रखते हुए खाने आदि का प्रबन्ध किया है या नहीं। बहरहाल किया होगा। अगर इस में कोई कमी बेशी हो जाए तो धैर्य का नमूना दिखाऐं। इन्शा अल्लाह प्रबन्ध हो जाऐंगे। प्रबन्ध करने वालों को थोड़ा समय दें। उन के लिए तो मेरा विचार है कि बहुत लम्बे समय के बाद पहला अवसर होगा कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों के लिए प्रबन्ध करने हैं। अल्लाह तआला बहरहाल प्रत्येक दृष्टि से जलसा को सफल बनाए और जैसा कि मैंने पहले कहा कि सब लोग इन जलसों के दिनों में दुआएं भी करते रहें। नमाज़ों की तरफ भी ध्यान रखें। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की दुआओं का भी अल्लाह तआला आप को वारिस बनाए।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

थे। यहां तक कि मिटाने के लिए मेरे विरुद्ध क़त्ल का मुकद्दमा भी बनाया गया जिसके विषय में मेरे ख़ुदा ने मुझे पहले ही सूचित कर दिया था।

हाशिया: :- हज़रत ईसा के समय यद्यपि कि यहूदी कई समूह में थे परन्तु जो सत्य पर समझे जाते थे वे दो समूह हो गए थे। (1) एक वह जो तौरात के पाबंद थे, उसी से अपनी समस्याओं का समाधान खोजते थे। (2) दूसरा समूह अहलेहदीस था जो तौरात पर हदीसों को निर्णायक समझता था। ये अहले हदीस इस्राइली देश में पर्याप्त संख्या में फैल गए थे और ऐसी-ऐसी हदीसों का अनुसरण करते थे जो प्राय: तौरात की विरोधी होती थी। उनका तर्क यह था कि

शरीअत (धर्म विधान) के मामले जैसे उपासना और उससे संबंधित कार्य कलाप एवं अधिकारों इत्यादि के नियम तौरात से नहीं मिलते, उन के लिए हदीसों पर आश्रित होना पड़ता है और हदीस की पुस्तक का नाम तालमूद था और उसमें प्रत्येक नबी के समय की हदीसें थीं। यह हदीसें एक दीर्घ अंतराल तक मौखिक रूप में रहीं। तत्पश्चात उन्हें लिखित रूप प्रदान किया गया इसलिए उनमें कुछ बनावटी हदीसें भी सम्मिलित हो गई थीं। इसका कारण यह था कि तत्कालीन यहूदी तेहत्तर समूहों में विभाजित हो गए थे। प्रत्येक समूह अपनी-अपनी हदीसें पृथक-पृथक रखता था। हदीसों के ज्ञानियों ने तौरात की ओर ध्यान देना छोड़ दिया था। प्राय: हदीसों पर अमल किया जाता था, तौरात को छोड़ दिया गया था। यदि तौरात का कोई आदेश हदीस के अनुकूल हुआ तो उसे स्वीकार कर लिया अन्यथा उसे रद्द कर दिया। अत: उस युग में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए तथा उनके संबोधित विशेष रूप में अहले हीस ही थे जो तौरात से अधिक हदीसों का सम्मान करते थे। और नबियों की पुस्तकों में पहले से यह सूचना दी गई थी कि जब महदी कई सम्प्रदायों में विभाजित जो जाएंगे तथा ख़ुदा की पुस्तक को छोड़ कर उसके विरुद्ध हदीसों का पालन करेंगे तब उनको एक हकम (आदेश देने वाले) तथा अदल (न्याय करने वाला) दिया जाएगा जो मसीह कहलाएगा और वह उसे स्वीकार करेंगे। अन्तत: भयानक दण्ड उनको मिलेगा और वह प्लेग की बीमारी थी। नऊज़ुबिल्लह!

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 47 से 50)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

हैं, लेकिन अगर इन रिपोर्टों की कोई प्रामाणिकता है, तो यह बहुत परेशान और ख़तरनाक बात है। अगर प्रवासियों को भविष्य में ऐसी दयालुता दी जाती है तो उनके ख़तरनाक परिणाम आ सकते हैं। इस तरह के अन्याय के कारण, स्थानीय लोगों में अपने आप नापसन्दीदगी और निराशा होगी जो विभिन्न शरणार्थियों के ख़िलाफ घृणा कर सकते हैं। स्वीडिश क़ौम एक समय से अपनी फराख दिली के कारण से जानी जाती है। लेकिन उनके साथ ग़ैर भेदभाव उनके व्यवहार में अत्यधिक बदलाव भी ला सकता है जिस से समाज की शांति खतरा हो सकता है और फिर यह परिवर्तन पलायन और Integration सकारात्मक प्रभाव का लाभ लेने के बजाय घृणा और संघर्ष में वृद्धि के कारण हो सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसलिए मैं सरकार और नीति निर्माताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए सलाह दूंगा कि स्थानीय लोगों के अधिकार किसी भी तरह से या किसी पर बुरा प्रभाव न पड़ें। यह एक संवेदनशील मामला है और इसे ध्यान से और सावधानी से देखा जाना चाहिए क्योंकि यदि स्थानीय लोगों के विस्थापित लोगों के लिए कोई नुकसान होता है, तो यह एक ख़तरनाक प्रतिक्रिया शुरू कर देगा। स्थानीय नगर कि शरणार्थियों के ख़िलाफ होंगे, जिसके परिणामस्वरूप समाज से समुदाय का अलगाव हो सकता है। और यह संभव है कि इस अकेलेपन की भावना के कारण, कुछ शरणार्थियों चरमपंथी लोगों द्वारा कट्टर पंथीकरण का शिकार हो जाएं। और हो सकता है कि इस तरह एक शैतानी चक्कर शुरू हो इस से क़ौम की शांति और अमन नष्ट हो जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर ख़ुदा तआला ने ऐसे चरमपंथी कुछ लोगों को भी radicalise करने में सफल हो जाते हैं तो यह राष्ट्र की समृद्धि, सुरक्षा और हिफाज़त के लिए बहुत बड़ा खतरा बन जाएगा। इसलिए जैसा कि मैंने कहा, एक संतुलित संतुलन को करना जाना चाहिए और अतिवाद के देखना होगा। सरकार जहां इन शरणार्थियों को आबाद करने के मसला को सुलझाने की कोशिश कर रही है वहां उन पर यह भी स्पष्ट करना होगा कि इन शरणार्थियों को जल्द से जल्द अपने पैरों पर खड़े होने और समाज के कल्याण में योगदान देने की उम्मीद है। दूसरी तरफ, स्थानीय नागरिकों को यह भी याद रखना चाहिए कि स्वीडन ने उन शरणार्थियों की सेवा के लिए नैतिक दायित्व के रूप में सेवा स्वीकार कर ली है। यही कारण है कि इसलिए उन्हें चाहिए कि वे सेवा और प्यार की भावना के साथ आने वालों का स्वागत करें। मैं फिर से कहूंगा कि यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने समाज में इन शरणार्थियों के अधिकारों पर अधिक ध्यान दें, अन्यथा परिस्थितियां आप के नियंत्रण से बाहर हो जाएंगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जहां तक इस्लामी धार्मिक शिक्षाओं का सम्बन्ध है तो मैं आप को फिर एक बार विश्वास दिलाता हूं इस्लाम शांति, सुरक्षा और सभी के लिए प्यार का धर्म है। इस्लाम मुस्लिमों से तकाज़ा करता है कि वे अपनी मातृभूमि से प्यार करें, अपनी मातृभूमि के प्रति वफादार होने और उसके नियमों का पालन करने की आवश्यकता है। यहां मुसलमान उम्मत को पश्चिम में आने वाले सभी प्रवासियों को एक ही संदेश देना चाहिए। इन लोगों को यह बताना चाहिए कि इस देश और मुलक का शुक्रिया करना अनिवार्य कर्तव्य है। उन्हें इस बात को याद दिलाना चाहिए कि उन्हें एक नया जीवन मिला है और अपने बच्चों को एक इस प्रकार कि देश में पालने का अवसर मिला है जिस में कोई युद्ध या फसाद नहीं है। इसलिए उन पर अनिवार्य है कि वे इस नए घर का सम्मान करें और इसका ख्याल रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : बात को आगे बढ़ाते हुए मैं आपके सामने कुछ इस्लामी शिक्षाओं को पेश करूँगा जिनके बारे में मेरा विश्वास है कि ये शिक्षाएं स्थानीय स्तर पर समाज में शांति स्थापित करने के लिए एक बड़ी भूमिका निभा सकती हैं। अल्लाह तआला सूरत अल-मुइदा की आयत 9 में फरमाता है:

"हे ईमान लाने वालो, तुम लोग न्याय के साथ गवाही देते हुए अल्लाह तआला के लिए इस प्रकार के आज्ञाकारी हो जाओ। और किसी प्रकार की शत्रुता तुम्हें इस बात पर तत्पर न करे कि तुम न्याय न करो तुम न्याय करो वह तक्वा के अधिक निकट है और अल्लाह का तक्वा धारण करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला इस को बहुत अच्छी तरह जानता है।

इस आयत के शब्द बहुत स्पष्ट हैं जहां मुसलमानों को आदेश दिया गया है कि वे अपने दुश्मनों के विरोध भी द्वैष तथा हसद न रखें और उन से बदला न लें। बल्कि उन्हें शिक्षा दी गई चाहे कैसे भी हालात हों वे हमेशा हर मामले में इस इन्साफ पर स्थापित रहेंगे। देखें परिवेश में अमन स्थापित करने के लिए कितनी सुन्दर शिक्षा है। इस्लाम ने केवल मुसलमानों को न्याय पर बने रहने के लिए मजबूर नहीं किया बल्कि न्याय के लिए आवश्यक मानकों का भी वर्णन किया। कुरआन करीम की सूरह अन्निसा की आयत 136 में अल्लाह तआला फरमाता है: "हे ईमान लाने वालो, तुम इन्साफ पर स्थापित रहने वाले और अल्लाह तआला के लिए गवाही देने वाले बन जाओ। यदि आपकी गवाही आपके या माता-पिता या करीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ भी हे। "

अत: इस्लाम सिखाता है कि एक मुस्लिम को सच्चाई और न्याय के बोल बाला के लिए अपने नफ्स और अपने नफ्स के विरुद्ध, और अपने माता-पिता या उसके करीबी प्रिय के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैय्यार रहना चाहिए। निश्चित रूप से, न्याय के इस से बेहतर स्तर हो ही नहीं सकते। अत: यह शिक्षा दुनिया में शांति स्थापित करने का दरवाज़ा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : कुरआन करीम की सूर: अल-हजरात आयत 10 में शांति के लिए एक और सुनहरा नियम उल्लेख किया है जहां अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर राष्ट्र या समूह आपस में लड़ पड़ें तो अन्य पक्षों को इकट्ठे होकर इस शांति झगड़े का समाधान किया जाना चाहिए। यदि शांतिपूर्ण समझौता संभव नहीं है, तो सभी राष्ट्रों को दमन और अन्याय को रोकने के प्रयास में एक साथ खड़े रहना चाहिए। अगर दुनिया इस सिद्धांत के महत्त्व को जान लेती है, तो मानव जाति के लिए अभी समय है कि वे युद्ध के शिकंजे से बच निकले।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "इस कम समय में, मैंने अभी केवल कुछ उदाहरणों का उल्लेख किया है, जो साबित करता है कि इस्लाम वह नहीं है जिसके बारे में आप ने मीडिया में पढ़ा या सुना है। कुरआन करीम नऊज़ बिल्लाह अतिवाद और आतंकवाद फैलाने की पुस्तक नहीं है, लेकिन यह सहानुभूति-प्रेम और मानवता की शिक्षा देती है। यदि मुसलमान अपने धर्म की सच्ची शिक्षाओं का पालन करते हैं, तो उनके देशों में कोई गृहयुद्ध और संघर्ष नहीं होगा और न ही उनकी समस्याएं अन्य देशों तक पहुंच जाएंगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तो अगर हम इस्लाम की असली तस्वीर देखना चाहते हैं तो हमें नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके चारों ख़लीफा के समय को देखना होगा। इसके उच्च उदाहरण साबित करते हैं कि इस्लाम शांति और न्याय के लिए एक चिराग़ है जो वैश्विक धार्मिक स्वतंत्रता और बहुलवाद की गारंटी देता है। उदाहरण के लिए, दूसरा ख़लीफा हजरत उमर रज़ अल्लाह के युग में इस्लाम सीरिया तक फैल गया, जहां एक मुस्लिम सरकार की स्थापना हुई थी। लेकिन रोमन हमले के परिणाम में मुसलमानों को मजबूर होकर मुल्क को छोड़ना पड़ा और इतिहास इस तथ्य का गवाह है कि जब मुसलमान सीरिया से निकले तो वहां के ईसाई निवासियों की आंखों में आंसू जारी हो गए और वे बहुत रोते हुए मुसलमानों की वापसी के लिए दुआएं करने लगे। क्योंकि उन्होंने देखा था कि कैसे मुस्लिम सरकार ने हमेशा उन के अधिकारों की रक्षा की है। इसलिए दु:ख की बात है और खेद की बात है कि, वर्तमान युग में, मुस्लिम सरकारें और मुस्लिम नेता अपने धर्म की मूल शिक्षा भुला बैठे हैं और उन्हें अपनी ताकत, व्यक्तिगत हितों और कुर्सी के बारे में चिंता है। उनके उत्पीड़न और अन्याय के कारण, स्थानीय लोग निराश और दुखी हैं, जिसने पूरे देश में चरमपंथियों और आतंकवादी संगठनों को लाभान्वित किया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बहरहाल इस मुश्किल दौर में बड़ी शक्तियों और वैश्विक संस्थाओं की यह ज़िम्मेदारी है कि वह हर समय न्याय से काम लें। जहाँ कहीं भी विवाद जन्म लें वहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी वैश्विक संगठनों को निष्पक्षता और समानता का प्रदर्शन करना चाहिए और उनका लक्ष्य केवल शांति स्थापित करना और शांति को सभी पक्षों में स्थापित करना होना चाहिए। तथ्य यह है कि यदि राष्ट्रों और कुछ समूहों ने अतीत में न्याय से काम लिया होता, तो जो अस्थिरता हम आज देखे रहे हैं, वह न होती, और न ही हमें आज रिफ्यूजी समस्या का सामना करना पड़ रहा होता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "फिर, कुरआन के सूरत अल-मोमेनून की आयत 9 में, एक अन्य महत्त्वपूर्ण इस्लामी सिद्धांत का वर्णन किया गया है। जिस में आता है कि "वास्तविक मुसलमान वे हैं जो अपनी अमानतों और अपने अहदों का ध्यान रखते हैं। अर्थात जो ज़िम्मेदारियां

उन्हें सुपुर्द की जाती हैं उन को अदा करने की कोशिश करते हैं। मेरे निकट यह दृष्टिकोण केवल मुसलमानों के लिए नहीं, बल्कि सभी देशों और राष्ट्रों के लिए एक वैश्विक सिद्धांत है। सभी सरकारों और वैश्विक संस्थाओं के सुपुर्द अमानतें हैं और उन के नेताओं का फर्ज़ है कि वे, ईमानदारी, सत्य और न्याय पर स्थापित रहते इन अमानतों का हक अदा करें। सरकारों और राजनेताओं की यह ज़िम्मेदारी हैं कि वह अपनी जनता की सेवा करें। हुकूमतों और राष्ट्रों की ज़िम्मदारी है कि वे जनता के सेवा करें और क़ौमों के भविष्य की सुरक्ष करें। इस ज़िम्मेदारी को मामूली न समझें। इसी तरह, संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र में यह है कि इस संगठन का मुख्य उद्देश्य भविष्य की पीढ़ियों को युद्ध की क्रूरता से बचाना और वैश्विक शांति बनाए रखना और बनाए रखने के लिए कोशिश करना है। संयुक्त राष्ट्र की अभिव्यक्ति बहुत स्पष्ट शब्दों में कहती है कि इस संगठन का उद्देश्य मानव जाति को उन गलतियों से बचाना है जिस के कारण बीसवीं शताब्दी में दो वैश्विक युद्ध हुए। इसलिए इस जिम्मेदारी पर विचार करते हुए, संयुक्त राष्ट्र को अपने उच्चतम लक्ष्यों को पूरा करने और शांति के महत्त्व को समझने की कोशिश करनी चाहिए, इसे वर्तमान का सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा माना जाना चाहिए। परन्तु अफसोस की बात है कि इस ज़िम्मेदारी को नज़र अंदाज किया जा रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं फिर से कहता हूँ कि अगर सभी पक्ष अपनी जिम्मेदारियों को समझें और न्याय से काम लेते हुए एक दूसरे के अधिकार अदा करें तो अब भी समय है कि युद्ध और जंग के काले बादल जो हमारे सिरों पर मंडला रहा है वे छट जाएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं एक बार फिर से दुनिया की महान शक्तियों को कहूंगा कि उन्हें दुनिया की शांति के लिए कड़ी मेहनत और ईमानदारी से प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला दुनिया के लोगों को हिक्मत दे और मानव जाति के व्यापक लाभ के लिए व्यक्तिगत हित एक तरफ रखने की तौफीक प्रदान करे। अगर हम ऐसा करने में असफल होते हैं तो फिर जैसा कि मैंने पहले कहा कि दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर तेजी से बढ़ रही है, जिस के प्रभाव आने वाली कई पीढ़ियों को प्रभावित करेंगे, क्योंकि कई देशों पर परमाणु हथियार हैं और इस युद्ध के परिणाम हमारी सोच से बाहर हैं। इसलिए हमें ख़ुद से पूछना है कि क्या हम अपने बच्चों और भविष्य की पीढ़ियों के लिए दुनिया को बेहतर छोड़ना चाहते हैं, या हम उन्हें अनिश्चित तरीके से जंग तथा युद्ध, रक्त का वारिस बना कर जाना चाहते हैं।?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला मानवता की रक्षा करे , और हम सभी पर दया करे, और सभी लोगों को दूसरों के साथ न्याय, बुद्धि और अच्छी तरह व्यवहार करने की तफीक़ प्रदान करे, ताकि हम सक्षम हो सकें कि हम अपने बच्चों और हमारी पीढ़ियों की रक्षा कर सकें। इन शब्दों के साथ, मैं आपसे अनुमति लेता हूं, लेकिन एक बार फिर मैं आपको सभी के निमंत्रण को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद देता हूं। अल्लाह तआला आप सब पर अपना फज़ल फरमाए। बहुत बहुत धन्यवाद।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह सम्बोधन आठ बज कर पांच मिन्ट तक जारी रहा। ख़िताब केबाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई। जिस में सभी मेहमान अपने अपने तरीके से शामिल हुए। उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने संसद के सदस्यों को उपहार प्रस्तुत किए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताब के बाद कार्यक्रम के अनुसार सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ खाना खाया। इस दौरान विभिन्न मेहमान बारी बारी हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अजीज़ के पास आते और मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अजीज़ ने इन मेहमानों केसाथ मुलाकात की। और बहुत से मेहमानों के निवेदन पर हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

यह प्रोग्राम आठ बज कर पांट मिन्ट तक जारी रहा।। साढ़े नौ बजे हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे।

मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

इस समारोह में शामिल मेहमानों पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब ने र गहरा प्रभाव डाला। बहुत से मेहमानों से अपनी भावनाओं, विचारों और बातों को स्पष्ट व्यक्त किया। इनमें से कुछ मेहमानों की प्रतिक्रियाए नीचे सूचीबद्ध हैं।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा का भाषण बहुत उच्च स्तर का था क्योंकि इस भाषण में, ख़लीफा के स्वीडन की स्थिति पर गहरी नज़र से देखा है। विशेष रूप से प्रवासियों के मामलों के लिए और यह बहुत दिलचस्प था। स्वीडन में शरणार्थियों के प्रवाह का ज़िक्र करते हुए, ख़लीफा का एक विशेष परिप्रेक्ष्य है कि शरणार्थियों को यहां अपनी ज़िम्मेदारी को अदा करना चाहिए और स्वीडिश लोगों को नज़र अंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। यह बहुत अच्छा था और स्वीडन में कोई राजनेता ऐसी बात नहीं करता।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यह मेरे लिए एक महान कार्यक्रम था। मुझे इस्लाम और आपके धर्म के बारे में एक नई तस्वीर देखने को मिली है। यदि अधिक लोग आपकी आवाज़ सुनें, तो दुनिया एक बेहतर जगह हो सकती है।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मैंने आज बहुत सारी चीज़ें सीखी हैं। यह बहुत प्रभावशाली था बल्कि इस से बढ़कर बल्कि यह इस से आशा बंधी है। मैं बहुत आभारी हूं कि ख़लीफा यहां आए। ख़लीफा के संदेश से हम ने महसूस किया है कि हम किसी भी विवाद को देखकर आंखें बंद नहीं कर सकते हैं कि यह स्वयं खत्म हो जाएगा। यह एक बहुत अच्छा संदेश था और मैं इसके लिए बहुत आभारी हूं।

* एक मेहमान ने अपनी इंप्रेशन व्यक्त करते हुए कहा: यह एक अच्छा अनुभव था। जब मुझे माल्मो मस्जिद का निमंत्रण मिला, तो मैं बहुत ख़ुश हुआ परन्तु यहां शामिल होने की ख़ुशी की सीमा न रही। मैं बहुत प्रभावित हूं। ख़लीफा का संदेश सुना है और मुझे ज्ञान, प्रेम और शांति मिली है क्योंकि यह प्यार का संदेश है। जितना ख़लीफा संबोधन कर रहे थे, उतना ही प्रभावित होता जा रहा था।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: लोगों को एक ही स्थान पर इकट्ठा करना एक बड़ी इच्छा है, क्योंकि आजकल दुनिया में ऐसी शक्तियां हैं जो मनुष्यों से मनुष्यों से दूर करना चाहती हैं। सब को एक ही स्थान पर इकट्ठा करने में आप सक्षम हैं। क्योंकि जब हम मिलते हैं, तो हमारी आंखें खुलती हैं और हमें और अधिक सीखने को मिलता है और हमें पूर्वाग्रह से लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस्लाम के ख़िलाफ बहुत से पूर्वाग्रह हैं और कई लोग अहमदिया मुस्लिम जमाअत के उद्देश्य को नहीं जानते हैं। जब हम एक साथ होते हैं, तो आपसी समझ बढ़ जाती है और इस प्रकार हम शांति और सद्भाव के संदेश को आगे बढ़ा सकते हैं।

* एक मेहमान ने अपना प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा: मुझे ख़ुशी है कि आपने यहां आने के लिए आमंत्रित किया है। ख़लीफा के शब्दों को सुनना बहुत अच्छा है। मुझे ख़ुशी है कि आपने इस विषय के बारे में बात की है। अक्सर, धार्मिक नेता शरणार्थियों की ज़िम्मेदारियों के बारे में बात नहीं करते हैं। समाज के लिए उनके कर्तव्य क्या हैं और स्वीडिश राष्ट्र शरणार्थियों की देखभाल कैसे कर सकता है? यह एक जबरदस्त सम्बोधन था कि शरणार्थी समाज के एकीकरण के साथ-साथ स्वीडिश समाज और राजनेताओं को संदेश था कि वे जिम्मेदार हैं कि वे समाज को कैसे सुधार सकते हैं।

* एक मेहमान ने अपना प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा: यह बहुत प्रभावशाली है कि किसी आध्यात्मिक व्यक्तित्व के शब्द न केवल आपकी बुद्धि को अच्छे लग रहे हों बल्कि इन बातों का प्रभाव आप के दिल पर भी पड़ रहा हो। यह मेरे लिए शान्ति का एक बड़ा कारण था और इस ने मुझे एक नया विचार दिया है कि हमें उन स्थितियों को बदलना होगा जो दुनिया में गड़बड़ी पैदा कर रही हैं। हम इन समस्याओं को हल कर सकते हैं यूरोप निकट युद्ध के कारण, जो प्रवासियों की समस्या है, अगर हम सभी मुहब्बत सब से नफरत किसी से नहीं के संदेश को सुनें और इसका पालन करें तो हम इस समस्या का भी हल कर सकते हैं।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त किए और कहा: मुझे बहुत ख़ुशी है कि मैंने इस कार्यक्रम में भाग लिया है। मैं समझता हूं कि जो ख़लीफा ने कहा वह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संदेश है और यह शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेश है। हर किसी को इस संदेश का पालन करना चाहिए। मैं बहुत प्रभावित हूं और यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण काम है। मुझे एक नई भावना मिली है।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जब आप अहमदिया मुस्लिम जमाअत के लक्ष्यों और इसकी पृष्ठभूमि की तरफ देखते हैं और दुनिया भर में ख़लीफा और अहमदियों की सेवाओं को देखते हैं, तो इस्लाम की अच्छाइयां समझ में आती हैं।

* एक मेहमान ऐके बेदर साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, ख़लीफा का संदेश बहुत महत्त्वपूर्ण था कि शांति और दूसरों को अपनी मान्यताओं पर सहिष्णुता का अधिकार देने से ही अमन स्थापित हो सकता है। विशेष रूप से शरणार्थी संकट के संदर्भ में, यह बहुत अच्छा है कि इन शरणार्थियों की भी यह ज़िम्मेदारी है कि वे इस स्वतंत्रता का सम्मान दें और समाज का लाभदायक वुजूद बनें। ख़लीफा ने स्थानीय लोगों को इहसास दिलाया है कि शरणार्थियों की समस्याओं में उनकी मदद करें और ज्यादा मांग न करें। ख़लीफा शांति का प्रतीक है और मैंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा है।

* इस अवसर पर एक ईसाई प्रवासी सलाम साहिब भी मौजूद थे। अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा: ख़लीफा के शब्द बहुत अच्छे थे और उन्होंने केवल शांति और एकता के बारे में बात की। मैंने इराक में ऐसी चीज़ें कभी नहीं सुनीं। लोग इस्लाम की वह शक्ल पेश नहीं करते हैं जो आपका ख़लीफा बता रहा है। काश के इराकी ख़लीफा को सुन लेते तो हमें इस तरह से प्रवास करने की ज़रूरत नहीं है, और यहां हमें स्वीडिश लोगों के सामने भिखारी बनने की ज़रूरत नहीं थी। यहां स्वीडिश लोगों को लगता है कि मैं कोई अधिकार जमाने आया हूं यह भावना मेरे लिए बहुत बुरी है। इराक में आपके ख़लीफा जैसा कोई एक भी व्यक्ति नहीं है। ख़लीफा तो साफ स्पष्ट रूप से बता रहे हैं और हमें बताते हैं कि दुनिया में क्या हो रहा है। आपकी जमाअत सभी मुस्लिम संप्रदायों से बेहतर है।

* एक मेहमान जोहन विनफॉल्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा का भाषण सबसे अच्छा था और ऐसा इसलिए है क्योंकि ख़लीफा के शब्द दिल से आते हैं और दिल को प्रभावित करते हैं। राजनेता लोगों को ख़ुश करने के लिए बात करते हैं, लेकिन ख़लीफा खुल कर और आज़ादी से बत करते हैं। ख़लीफा ने कुछ महत्त्वपूर्ण और हिक्मत वाली नसीहतें कीं। मुझे इस्लाम के बारे में जानने का बहुत कुछ अवसर मिला है। मैं मानता हूं कि शरणार्थियों को नए स्थान पर आ कर इस देश का सम्मान करना चाहिए और सरकार को चाहिए कि वह शरणार्थीयों का मार्गदर्शन करे और उनकी अपेक्षाओं के अनुसार मार्गदर्शन करें। ख़लीफा ने कहा कि शांति दोनों पक्षों के सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। हमें शरणार्थियों का स्वागत करने की भी आवश्यकता है। मुझे राजनीतिक मामलों में बहुत दिलचस्पी है और मैंने शरणार्थी संकट पर कई लेख पढ़े हैं, लेकिन मैंने ख़लीफा जैसे प्रभावशाली विश्लेषण नहीं पढ़े हैं। बहुत से लोगों पर इस्लाम का बुरा प्रभाव है।

* एक मेहमान ईवा लोफगम अपने विचार व्यक्त करते थे: मैं 1970 ई के दशक से अहमदियों को जानती हूं जब मैं पश्चिम अफ्रीका में थी और वहां उनमें से कुछ को मिली थी। मैं आपके ख़लीफा से बहुत प्रभावित हूं। स्वीडन के बारे में उन्हें बहुत ज्ञान था। उन्होंने इस बारे में बात की जो मुझे पहले नहीं पता था। ख़लीफा ने राजनीतिक मुद्दे पर बात की और समाधान प्रस्तुत किया, मैं आपकी वार्ता के सौ प्रतिशत से सहमत हूं। ख़लीफा ने इस्लाम की मूल तस्वीर प्रस्तुत की है। ख़लीफा के पास शरणार्थी परिभ्रमण के बारे में गहन विश्लेषण है और यह बिल्कुल अच्छा है कि दोनों पक्षों को एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए। मैं विविधता के विषय पर व्याख्यान की प्रशंसा करती हूं और कई लोगों से मिलती हूं, मैं समझती हूं कि आपके ख़लीफा मुस्लिमों के लिए एक आदर्श उदाहरण हैं। यह आश्चर्यजनक था कि ख़लीफा कुरआन के संदर्भों के बारे में बात कर रहे थे। ख़लीफा ने संयुक्त राष्ट्र के नियमों का भी उल्लेख किया। मेरे निकट कई करीबी दोस्त हैं जो इस्लाम से बहुत डरे हुए हैं। अब मैं जाऊंगी और उन्हें बताऊंगी कि इस्लाम की वास्तविकता क्या है और इस्लाम से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे इस भाषण का यूट्यूब लिंक भिजवा दें ताकि मैं अपने दोस्तों तक पहुंच दूं।

* एक मेहमान श्री स्टिग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यह एक बहुत ही रोचक भाषण था और मैंने आज से पहले कभी भी इस्लाम के बारे में इस तरीके से बात करते हुए नहीं देखा है। ख़लीफा ने दुनिया के विभिन्न मुद्दों का उल्लेख किया और सलाह दी कि शांति स्थापित करें। यह संदेश आज और पीढ़ियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण संदेश है। ख़लीफा एक बड़े शांतिपूर्वक तरीके से बात कर रहे हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं।

* एक मेहमान श्री सिब्ला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जो संदेश ख़लीफा ने दिया है, यह सच्चा संदेश है कि सभी धर्मों ने अपनी शुरुआत में दिया है, हर धर्म की मूल शिक्षा समान है। ख़लीफा सभी को एक बात की तरफ बुला रहे हैं। आप के शब्दों को सुनकर, मैं आश्वस्त हूं कि धर्म दुनिया की समस्याओं का कारण नहीं है। यदि मुसलमानों के साथ मतभेद हैं तो वे धर्म के नहीं बल्कि संस्कृति के हैं। ख़लीफा का संदेश एक-दूसरे का सम्मान करना और पारस्परिक मतभेदों से बचना बहुत आसान है। मैं शान्ति के लिए ख़लीफा की कोशिशों को बहुत सम्मान के साथ देखता हूं।

आज से पहले मुझे इस्लाम के बारे में कुछ जानकारी थी, लेकिन अब मुझे बहुत कुछ पता चला है और मैंने फैसला किया है कि अब मैं कुरआन को पढ़ने की कोशिश करूंगा। ख़लीफा ने मुझे भविष्य में एक नई आशा दी है।

* एक मेहमान गोरम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा का भाषण बहुत दिलचस्प था। मुझे आश्चर्य है कि कई संसद के सदस्य में आए थे, यह एक सबूत है कि संसद के सभी सदस्य आपके और आपके आंदोलनों के साथ हैं। ख़लीफा को देखना और शांति का संदेश सुनना बहुत अच्छा था। ख़लीफा का संदेश समय की कुंजी है। ख़लीफा को देखकर लगता है कि आप बहुत दयालु और सभ्य हैं। ख़लीफा ने कुरआन की आयतों के आलोक में कहा कि यह साबित करता है कि इस्लामिक शिक्षा वह है जो आप कह रहे हैं। कुरआन के शब्द स्वयं अपने अंदर बहुत आकर्षक हैं।

मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने शरणार्थी संकट के बारे में इतना कहा क्योंकि अधिकांश धार्मिक नेता इस विषय से दूर रहते हैं। मुझे इस मामले का नहीं पता था कि एक महिला को अस्पताल में इलाज करने से रोका गया था और यह साबित करता है कि आपका ज्ञान बहुत व्यापक है और आप कितना अधिक हमारे बारे में सोचते हैं।

ख़लीफा ने कहा कि यदि शरणार्थी ज़िम्मेदारी के साथ काम नहीं करते हैं, तो वे इसके बुरे परिणाम निकलेंगे। ख़लीफा दुनिया में उपद्रवों को रोकना चाहते हैं और यह एक सार्थक बात है। उन्होंने हमें चेतावनी दी है कि यदि दोनों पक्ष शांति स्थापित करने की अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं करते हैं तो एक प्रतिक्रिया की श्रृंखला शुरू हो सकती है।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि आपके नेता एक बहुत अच्छे तकरीर करने वाले हैं। वे इस अंदाज़ में बोले कि मुझे हिलाकर रख दिया। आप उन्हें Holiness कहते हैं, लेकिन मैं उन्हें Your Highness भी कहना चाहूंगा।

* एक मेहमान गुन्नर हैंड्रिकसन ने इन शब्दों में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया: यह एक अच्छा कार्यक्रम था और ख़लीफा का रिफ्यूजी संकट का विश्लेषण करना बहुत अच्छा था। ख़लीफा बहुत ज्ञान की बात करते हैं और उनके बयान में सच्चाई है। मेरी इच्छा है कि सभी मुसलमानों का आपके ख़लीफा जैसा मुखिया होता, जो उन्हें शांति और सच्चाई की तरफ लाता। केवल एक सवाल है कि आप की महिलाएं कहां हैं?

* एक पुलिसकर्मी आरून ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। अपने विचार व्यक्त करते हुए, उन्होंने कहा: ख़लीफा का सम्बोधन बहुत प्रभावशाली था। ख़लीफा ने सही ढंग से कहा कि हम इधर स्वीडन में भी प्रभावित हुए हैं और खतरे से बाहर नहीं हैं। यह आयोजन इन सभी घटनाओं की तुलना में अधिक शांतिपूर्ण थी जिस में मैं कभी भी गया हूं। इस्लामी नेता के शांति संदेश सुनने के लिए सभी व्यवसायों के लोग इकट्ठे हुए थे। यहां आने की एक झलक थी क्योंकि वह निश्चित रूप से एक महान नेता हैं।

ख़लीफा ने कहा कि हमें आपसी मतभेदों पर विचार करना चाहिए। शरणार्थी संकट एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मुद्दा है और ख़लीफा ने हमें बताया कि पारस्परिक सम्मान स्थापित करके इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। बेशक मैंने आज इस्लाम के बारे में बहुत कुछ सीखा है।

* संसद सदस्य श्री वाल्टर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मुझे शरणार्थी संकट पर ख़लीफा का विश्लेषण करना बहुत अच्छा लगा। यह समकालीन विषय है और यह बहुत अच्छा है कि हम ख़लीफा के विचारों से अवगत हो गए हैं। ख़लीफा ने कहा कि दोनों पक्षों की ज़िम्मेदारियां हैं और सरकार और संयुक्त राष्ट्र के अपने बड़े वादों और जनादेशों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी है। ख़लीफा जहां भी जाते हैं वहां शांति फैलती है।

* संसद के सदस्य श्रीमान बेंग ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: हमें बहुत गर्व है कि दुनिया में एक महान नेता स्वीडन आया था।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के संबोधन

के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए और कहा: "यह एक महान व्यक्तित्व का एक बड़ा भाषण था। ख़लीफा का संदेश न केवल स्वीडन के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए है, बल्कि पूरी दुनिया है कि विश्व के नेताओं को शांति की कोशिश करनी चाहिए और अपनी क़ौमों को प्यार से घायल करें। ख़लीफा ने शरणार्थियों को स्थानीय समाज में एकीकृत करने की भी चेतावनी दी है। निश्चित रूप से ख़लीफा ने मुझे और मेरे साथी सहयोगियों को बहुत कुछ सोचने को दिया है।

* एक पुलिसकर्मी जोर्जन कार्लसन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: कार्यक्रम से पहले मैं सुरक्षा के बारे में चिंतित था। लेकिन जब हम यहां आए, तो बहुत अच्छी व्यवस्थाएं हुईं।

महोदय ने कहा: ख़लीफा के इस कार्यक्रम में शामिल होना मेरे लिए सम्मान का विषय है। इस चिंता के युग में जिस में से हम गुज़र रहे हैं ख़लीफा का संदेश हमारे संबंध में बहुत महत्त्वपूर्ण था। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि समय के ख़लीफा जैसे व्यक्ति हमें मानव सहानुभूति के महत्व को महसूस करने के लिए मौजूद हैं।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: ख़लीफा का भाषण बहुत अद्भुत था। दिल कह रहा है कि सम्बोधन खत्म न हो।

* इसी प्रकार, एक स्वीडिश महिला मिस अन्ना साहिबा, जिन्होंने कार्यक्रम के बारे में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया, ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा: बहुत से लोग सच्चाई बोलने का दावा करते हैं, लेकिन आप को उन की वास्तविकता का ज्ञान उस समय होता है जब आप उनकी बातें सुनते हैं और आज शाम मुझे सच ही सुनने को मिला।

* एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: शांति की स्थापना के संबंध में इस मामले को सुनना बहुत अच्छा था और मुस्लिम नेता से शांति के संदेश को सुनना बहुत अच्छा था। मेरी इच्छा है कि सभी मुसलमानों की सोच अहमदी मुसलमानों की तरह हो जाए। मुझे आशा है कि मध्य पूर्व और बाकी दुनिया में शांति स्थापित हो जाएगी।

* समारोह में शामिल एक स्वीडिश मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मेरी राय में, ख़लीफा ने अपने भाषण को महान सोच के साथ लिखा और पूरी तैयारी के साथ लिखा क्योंकि उन्हें स्वीडन की आंतरिक स्थितियों का अच्छा ज्ञान था। यहां स्वीडन में शरणार्थियों के मुद्दे पर उन की सोच बहुत ही अद्वितीय थी। ख़लीफा ने कहा कि इन शरणार्थियों पर भी कुछ जिम्मेदारियां आती हैं और यह ऐसी बात है जो स्वीडिश राजनेता कभी नहीं कहते ।

* समारोह शामिल में एक मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यह समारोह मेरे लिए एक महान भावना उत्पन्न करने वाला साबित हुआ। आप लोगों के धर्म इस्लाम के बारे में मेरा मेरा सिद्धांत पहले कुछ ओर था। मुझे लगता है कि अगर लोग ख़लीफा की बातें सुनें, तो दुनिया की स्थितियां बदल जाएं।

* एक स्वीडिश मेहमान ने अपनी धारणा व्यक्त की और कहा: "आज का आयोजन हर प्रकार के लोगों को अपने अन्दर समा लेने वाला था और आज मैंने बहुत कुछ सीखा है। ख़लीफा का भाषण बहुत प्रभावी था, लेकिन मैं कहूंगा कि ख़लीफा के ख़िताब से हमें आशा दिखाई दी है। मैं बहुत आभारी हूं कि ख़लीफा हमारे पास आए और स्वीडन की समस्याओं के बारे में हमें मार्गदर्शन किया। मुझे बहुत ख़ुशी है कि उन्होंने केवल खतरे की घण्टी नहीं मारी बल्कि हमें सतर्क रहने को कहा और हमें आंखें खोलने के लिए कहा। इसमें कोई संदेह नहीं था कि एक बड़ा ज़बरदस्त ख़िताब था।

* प्रोग्राम में शामिल एक स्वीडिश मेहमान ने कहा, बहुत ईमान वर्धक अनुभव था। जब मुझे माल्मो मस्जिद का उद्घाटन करने का निमंत्रण मिला, तो मुझे प्रभावित हुआ कि मुसलमानों ने आज मुझे आमंत्रित किया है, लेकिन ख़लीफा का ख़िताब सुन कर मैं पहले से दौगुना प्रभावित हुआ हूं, क्योंकि ख़लीफा के पास ज्ञान, प्रेम और शांति की अच्छी बातें थीं। ।

* एक स्वीडिश मेहमान ने अपने विचार व्यक्त किए और कहा: "एक ही स्थान पर अलग-अलग लोगों को इकट्ठा करना बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि कई अंधेरी शक्तियां लोगों को अलग करने की कोशिश कर रही हैं और उनमें फित्ना पैदा करने की कोशिश कर रही हैं। मुझे लगता है कि आप लोग सफल हो गए हैं क्योंकि ख़लीफा को मिल कर ख़लीफा की ख़िताब सुनकर और कई नई चीजों को सुनकर हमारी आंखें कुल चुकी हैं, अब हम त्रसदी से उबरेंगे क्योंकि आज इस्लाम के बारे में बहुत से पूर्वाग्रह हैं और कई लोगों के ज्ञान में नहीं हैं कि जमाअत अहमदी न केवल मुस्लिम मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। अत: जमाअत अहमिदया से मिलने के बाद ही आप को पता चलता है कि आप दुनिया में शांति और सद्भाव ला सकते हैं।

* एक स्वीडिश मेहमान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: मुझे इस कार्यक्रम में शामिल होने और ख़लीफा के सम्बोधन को सुनकर ख़ुशी हुई। ख़लीफा ने उन विषयों के बारे में बात की है जिन पर अन्य धार्मिक नेता भयभीत हैं। उन्होंने खुले तौर पर उन लोगों को बताया जो स्वीडन आए हैं और बताया कि न से लोगों को क्या आशाएं हैं। स्वीडन की इसी तरह की ज़िम्मेदारी कैसी है और उन्हें उन शरणार्थियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? एक महान भाषण था जिस से दोनों पक्षों की जिम्मेदारियां, शरणार्थियों को कैसे काम करना चाहिए, लोग और सरकार, किस प्रकार एक स्थिर और शांतिपूर्ण समाज अस्तित्व में आ ला सकते हैं।

* प्रोग्राम में शामिल एक स्वीडिश मेहमान ने कहा, एक आध्यात्मिक नेता को सुनना बहुत अच्छा है जिस ने मेरे दिल तथा दिमाग़ की बातें कीं। ख़लीफुतल मसीह के भाषण के बाद, मैंने नई ताकत और उत्साह आया है। हमें इन संकटों को समाप्त करना होगा जिन के पकड़ में दुनिया आ चुकी है। अगर हम मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं का सन्देश अपनाएं तो जंग तथा नफरत के नतीजें में पैदा हुए शरणार्थियों के संकट को दूर करने में सक्षम हो सकते हैं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

समय का मुजद्दिद

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहि-स्सालम फरमाते हैं कि

" इस समय महज़ अल्लाह तआला के लिए इस ज़रूरी बात से सूचना देता हूँ कि मुझे ख़ुदा तआला ने इस चौदहवीं सदी के सिर पर अपनी तरफ से मामूर करके दीन मतीन इस्लाम की तजदीद और ताईद के लिए भेजा है ताकि में इस अंधकारमय ज़माना में कुर्आन की अच्छाइयां और हज़रत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़मतें ज़ाहिर करूँ और उन सारे दुश्मनों को जो इस्लाम पर हमला कर रहें हैं इन नूरों और बरकतों और ख़ुवारिक (चमत्कार) और अलूमे लदुनिया (अल्लाह तआला की तरफ से प्रदत्त ज्ञान) की मदद से उत्तर दूँ जो मुझ को अता किए गए हैं।"

(बरकातुद्दुआ रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 6 पृष्ठ 34 प्रकाशन 1984 इ० लन्दन)

" और मुसन्निफ को भी इस बात का इल्म दिया गया है कि वह समय का मुजद्दिद है। और रूहानी तौर पर इसके कमालात मसीह इब्ने मरयम से मुशाबा हैं। और एक को दूसरे से बहुत अधिक मुनासबत और मुशाबहत है।"

(इश्तिहर मुनसिल्का आईना कमालात इस्लाम , रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 657 प्रकाशन 1984 इ० लन्दन)

जरी उल्लाह फी हुलल्लि अंबिया

(ख़ुदा का पहलवान नबियों के लिबास में)

"मैं ही हूं जिस का ख़ुदा ने वादा किया था। हां मैं वही हूं जिस का सारे नबियों की ज़ुबान पर वादा हुआ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 65)

"ख़ुदा तआला ने मेरा नाम ईसा ही नहीं रखा। बल्कि शुरू से अन्त तक जिस कदर अंबिया अलैहिस्सलाम के नाम थे वे सब मेरे नाम रख दिए हैं। अत: बराहीन अहमदिया पिछले हिस्सों में मेरा नाम आदम रखा। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है اَرَدْتُ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدَمَ

इस तरह बराहीने अहमदिया के पिछले हिस्सों में मेरा नाम इब्राहीम भी रखा गया है। जैसा के फरमाया سَلَامٌ عَلَيْكَ يَا اِبْرَاهِيْمُ अर्थात हे इब्राहीम तुझ पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 11 October 2018 Issue No. 41

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

सलाम। इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने बहुत बरकतें दी थीं। और वह हमेशा दुश्मनों के हाथ से सलामत रहा। अत: मेरा नाम इब्राहीम रख कर ख़ुदा तआला यह इशारा करता है कि ऐसा ही इस इब्राहीम को बरकतें दी जाऐंगी और दुश्मन इसको कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे.....।

इसी तरह बराहीन अहमदिया के पिछले हिस्सों में मेरा नाम यूसुफ भी रखा गया है और ऐसा ही बराहीन अहमदिया के पिछले हिस्सों में मेरा नाम मूसा रखा गया। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है

تلطف بالناس و ترحم عليهم و انت فيهم بمنزلة موسىٰ واصبر على ما يقولون

अर्थात लोगों से नर्मी से पेश आ और उन पर रहम कर। तो इन में मूसा के मर्तबा पर है। जो वह कहते हैं इस पर सबर कर।"

इसी तरह अल्लाह तआला ने बराहीन अहमदिया के पिछले हिस्सों में मेरा नाम दाऊद भी रखा। जिसकी तफसील अंकरीब अपने मौका पर आएगी। ऐसा ही बराहीन अहमदिया के पिछले हिस्सों में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम सुलैमान भी रखा और इसकी तफसील भी अंकरीब आएगी । ऐसा ही बराहीन अहमदिया के पिछले हिस्सों में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम अहमद और मुहम्मद भी रखा और यह इस बात की तरफ इशारा है कि जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातिम नबुव्वत हैं वैसा ही यह आजिज़ ख़ातिम विलायत है। और इस के बाद मेरे बारे में बराहीन अहमदिया कि पिछले हिस्सों में यह भी फरमाया جری اللہ فی حلل الانبیاء अर्थात ख़ुदा रसूल सारे पिछले अंबिया अलैहिस्सलाम कि लिबाद में। इस ईलाही वह्यी का अनुवाद यह है कि आदम से लेकर आख़िर तक जिस कदर अंबिया अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की तरफ से दुनिया में आऐ हैं चाहे वे इसराईली हैं या ग़ैर इसराईली , इन सब के खास किस्से या ख़ास सिफतों में से इस आजिज़ को कुछ हिस्सा दिया गया है और एक नबी भी ऐसा नहीं गुज़रा जिसके गुणों या खूबियों में से इस आजिज़ को हिस्सा नहीं दिया गया। हर एक नबी की फितरत का नक्श मेरी फितर में है। इसी पर ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी.....।

इस ज़माना में ख़ुदा ने चाहा कि जिस कदर नेक और सच्चे पवित्र नबी गुज़र चुके हैं एक ही व्यक्ति के वजूद में इनके नमूने प्रकट किए जाऐं। अत: वह मैं हूँ..... इसी तरह ख़ुदा ने मेरा नाम ज़ुलकरनैन भी रखा। क्योंकि ख़ुदा तआला की मेरे बारे में यह पाक वह्यी कि जरी उल्लाह फी हुलल्लि अंबिया जिसके यह अर्थ हैं कि ख़ुदा का रसूल सारे नबियों के पैरायों में, चाहती है कि मुझ में ज़ुलकरनैन के भी ख़ूबियां भी हों। क्योंकि सुरत कहफ से साबित है कि ज़ुलकरनैन भी साहिब वह्यी था।"

(बराहीन अहमदिया हिस्सा 5 रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21 पृष्ठ 112 से 118 प्रकाशित 1984 इ० लन्दन)

आखरी नूर

"मुबारक हो जिसने मुझे पहचाना। मैं ख़ुदा की सब राहों में से आखरी राह हूं। और मैं उसके सब नूर में से आखरी नूर हूं। बदकिस्मत है वह जो मुझे छोड़ता है क्योंकि मेरे बग़ैर सब अंधेरा है।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 61 प्रकाशन लंदन 1984 ई)

अल्लाह की इनायत

फरमाया:

1. खुदा ने मुझे कुरआन के ज्ञान प्रदान किए हैं ।
2. खुदा ने मुझे कुरआन की ज़बान में चमत्कार प्रदान किया है।
3. खुदा ने मेरी दुआओं में सबसे बढ़कर कुबूलियत रखी है।
4. खुदा ने मुझे आसमान के चिन्ह दिए हैं।
5. खुदा ने मुझे ज़मीन से चिन्ह दिए हैं।
6. खुदा ने मुझे वादा दे रखा है कि तुझ से हर एक मुकाबला करने वाला पराजित होगा।
7. खुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी है कि तेरा अनुकरण करने वाले हमेशा अपनी दलीलों और सच्चाई में विजय रहेंगे और दुनिया में प्राय: वे और उनकी नस्ल बड़ी बड़ी इज्जतें पाएंगे ताकि उन पर प्रमाणित हो कि जो ख़ुदा की तरफ से आता है वह कुछ नुकसान नहीं उठाता।
8. खुदा ने मुझे वादा दे रखा है कि कयामत तक और जब तक कि दुनिया का सिलसिला ख़त्म ना हो जाए मैं तेरी बरकतें प्रकट करता रहूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकतें ढूंढेंगे।
9. ख़ुदा ने आज से 20 वर्ष पहले मुझे बिशारत दी है कि तेरा इनकार किया जाएगा लोग तुझे स्वीकार नहीं करेंगे पर मैं तुझे स्वीकार करूंगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से तेरी सच्चाई प्रकट करूंगा।
10. और खुदा ने मुझे वादा दिया है कि तेरी बरकतों का पुन: नूर प्रकट करने के लिए तुझ ही से और तेरी नस्ल से एक आदमी खड़ा किया जाएगा जिस में रूहुल कुदुस की बरकतें फूंकूंगा और नेक दिल का और ख़ुदा से निहायत संबंध रखने वाला होगा और अल्लाह की सच्चाई और बुलंदी की तरफ से आएगा। मानो ख़ुदा आसमान से अवतरित हुआ और यह 10 पूर्ण बातें हैं। देखो वह ज़माना चला आता है बल्कि निकट है खुदा इस सिलसिले को दुनिया में बड़ा सम्मान और वृद्धि देगा और यह सिलसिला पूरब से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण में फैलेगा और दुनिया में इस्लाम से अभिप्राय यही सिलसिला होगा। ये बातें इन्सान की नहीं उस खुदा की हैं जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"

(तोहफा गोलड़विया रूहानी खज़ायन भाग 17 पृष्ठ 181 प्रकाशन 1984 ई लंदन)

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह
खुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार
आसमां पर दावते हक के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तबओं पर फरिश्तों का उतार
इस्मऊ सौतस्समाअ जाअल मसीह जाअल मसीह
नीज़ बिशनो अज़ ज़मी आमद इमामे कामगार
आसमां बारिद निशां अल्वक्त मी गोयद ज़मी
ईं जो शाहिद अज़ पये मन नारा ज़न चूं बेकरार
अब इसी गुलशन में लोगो राहतो आराम है
वक्त है जल्द आओ ऐ आवारगाने दश्ते ख़ार

(दुर्रे समीन उर्दू पृष्ठ 156-157 प्रकाशन 2004ई)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad